Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 18

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

6 रमाज़न 1441 हिजरी कमरी 30 शहादत 1399 हिजरी शमसी 30 अप्रैल 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मैं फिर तुम को सम्बोधित कर के कहता हूँ कि तुम जो मेरे साथ एक सच्चा सम्बन्ध पैदा करते हो इस से यही उद्देश्य है कि तुम अपने आचरण में ,आदतों में एक स्पष्ट तबदीली करो जो दूसरों के लिए हिदायत और सौभाग्य का कारण हो।

इन्सान बहुत तमन्नाएं रखता है। ग़ैब की बातों की किस को ख़बर है। इच्छाओं के अनुसार ज़िन्दगी कभी नहीं चलती है। इच्छाओं का सिलसिला और है और तक़दीर का सिलसिला और है और यही सिलसिला सच्चा है। याद रखो कि ख़ुदा तआला के पास इन्सान के कामों का लेखा-जोखा सच्चा है। उसे क्या मालूम है कि इस में क्या-क्या लिखा है इस लिए दिल को जगा जगा कर सचेत करना चाहिए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

नमाज़ के समय रुहानी अवस्थाओं की एक प्रतीकात्मक तस्वीर है

और यह भी याद रखो कि यह जो पाँच वक़्त नमाज़ के लिए निर्धारित हैं यह कोई ज़ोर और ज़बरदस्ती के तौर पर नहीं बल्कि अगर ध्यान दो तो यह दरअसल रुहानी अवस्थाओं की एक प्रतीकात्मक तस्वीर है। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि

اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ

(बनी इस्राईल :79) अर्थात क़ायम करो नमाज़ को दलूकश्शमस से। अब देखो कि अल्लाह तआला ने यहां नमाज़ को क़ायन करने को दलूकश्शमस से लिया है। दुलूक के अर्थों में यद्यपि मतभेद है , लेकिन दोपहर के ढलने के समय का नाम दुलूक है। अब दुलूक से लेकर पाँच नमाज़ें रख दें। इस में हिक्मत और सिर क्या है? क़ानून क़ुदरत दिखाता है कि रुहानी पतन और विनय के स्तर भी दुलूक ही से शुरू होते हैं और पाँच ही हालतें आती हैं। अत: यह कुदरती नमाज़ भी इस वक़्त से शुरू होती है जब दुख और ग़म के चिन्ह शुरू होते हैं। इस वक़्त जबकि इन्सान पर कोई आफ़त या मुसीबत आती है तो किस क़दर विनय और विनम्रता करता है। अब इस वक़्त अगर भूकंप आए तो तुम समझ सकते हो कि तबीयत में कैसा रोना और विनय पैदा हो जाता है। इसी तरह पर सोचो कि अगर जैसे किसी आदमी पर नालिश हो तो समन या वारंट आने पर इस को मालूम होगा कि अमुक दफ़ा फ़ौजदारी या दीवानी में नालिश हुई है। अब वारंट के पढ़ने के बाद उस की हालत में मानो आधे दिन के बाद पतन शुरू हुआ क्योंकि वारंट या समन तक तो उसे कुछ मालूम न था। अब ख़्याल पैदा हुआ कि ख़ुदा जाने इधर वकील हो या क्या हो? इस किस्म की शंकाओं और चिन्ताओं से जो पतन पैदा होता है यह वही हालत दुलूक है और यह पहली हालत है जो नमाज़ ज़ुहर के क़ाइम मक़ाम है और इस की प्रतीकात्मक हालत नमाज़ ज़ुहर है। अब दूसरी हालत इस पर वह आती है जबकि वह अदालत के कमरा में खड़ा है। विपक्षा पक्ष और अदालत की तरफ़ से जिरह के सवाल हो रहे हैं और वह एक अजीब हालत होती है। यह वह हालत और वक़्त है जो नमाज़ अस्र का नमूना है क्योंकि असर घटने और निचोड़ने को कहते हैं। जब हालत और भी नाज़ुक हो जाती है और जुर्म का निर्धारण हो जाती है तो आशा और निराशा बढ़ती है क्योंकि अब ख़्याल होता है कि सज़ा मिल जाएगी यह वह वक़्त है जो मग़रिब की नमाज़ की तस्वीर है। फिर जब हुक्म सुनाया गया और कंस्टेबल या कोर्ट इन्सपेक्टर के हवाला किया गया तो वह रुहानी तौर पर नमाज़ इशा की प्रतीकात्मक तस्वीर है। यहां तक कि नमाज़ की सुब्ह सादिक़ (भौर) प्रकट हुई। और

اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا

(अल इनशराह: 7) की हालत का समय आ गया तो रुहानी नमाज़ फ़ज्र का वक़्त आ गया और फ़ज्र की नमाज़ उस की प्रतीकात्मक तस्वीर है।

सारांक्ष मैं फिर तुम को सम्बोधित कर के कहता हूँ कि तुम जो मेरे साथ एक सच्चा सम्बन्ध पैदा करते हो इस से यही उद्देश्य है कि तुम अपने आचरण में ,आदतों में एक स्पष्ट तबदीली करो जो दूसरों के लिए हिदायत और सौभाग्य का कारण हो।

14 जनवरी 1898 ई

आख़िरत पर नज़र रखें

फ़रमाया : लोगों के लिए अनिवार्य है कि आख़िरत पर नज़र रखें। अज़ाब से पहले डरना चाहिए।

ए मर्द आख़िर बीं मुबारक बंदा अस्त

देखो लूत इत्यादि क़ौमों का अंजाम किया हुआ। हर एक को अनिवार्य है कि दिल अगर सख़्त भी हो तो उस को बुरा भला कह कर के विनम्रता की शिक्षा दे। हमारी जमाअत के लिए सबसे ज़रूरी है, क्योंकि उनको ताज़ा मार्फ़त मिलती है। अगर कोई दावा तो मार्फ़त का करे मगर इस पर चले नहीं तो यह मुंह की बातें ही है। इसलिए हमारी जमाअत दूसरों की ग़फ़लत से ख़ुद ग़ाफ़िल न रहे और उनकी मुहब्बत को सर्द देखकर अपनी मुहब्बत को ठंडी न करे। इन्सान बहुत तमन्नाएं रखता है। ग़ैब की बातों की किस को ख़बर है। इच्छाओं के अनुसार ज़िन्दगी कभी नहीं चलती है। इच्छाओं का सिलसिला और है और तक़दीर का सिलसिला और है और यही सिलसिला सच्चा है। याद रखो कि ख़ुदा तआला के पास इन्सान के कामों का लेखा-जोखा सच्चा है। उसे क्या मालूम है कि इस में क्या-क्या लिखा है इस लिए दिल को जगा जगा कर सचेत करना चाहिए।

फ़रमाया:

अफ़सोस की बात है कि आम तौर पर मसीबतों के आने की वजह से लोगों का गर्व तथा अहंकार दूर नहीं हुआ मैं सच कहता हूँ कि यह दूर न होंगी जब तक लोगों की ज़िद और आड़ दूर न होगी। मैं देखता हूँ कि लोग ख़ुदा तआला से पूरी मैत्री के लिए तैयार नहीं हैं। अकाल के दौरान में लोगों ने महसूस नहीं किया। आरम्भ में मक्का और मदीना का फ़तवा भी डरा दिया करता था। जब कोई कहता कि मक्का मुअज़्ज़मा से फ़तवा आया है तो लोग डर जाते थे लेकिन अब इन मसीबतों को देखकर भी लोग नहीं डरते। मेरी राय है कि जब तक कि लोग रूप्ण तौर पर रुजू न करें तक़दीर न बदलेगी

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ (अर्रअद 12)

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 129 से 131 प्रकाशन कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-1)

इस्लाम का अर्थ है "अमन "और क़ुरआन शरीफ़ में ऐसी बहुत सी आयतें हैं जो क्रम से स्पष्ट करती हैं कि मुसलमानों को हमेशा अमन वाला रहना चाहिए और दूसरों से मुहब्बत और इज़्ज़त से व्यवहार करना चाहिए।

रसूल करीम ने हमें शिक्षा दी है कि वास्तविक ज़हनी सुकून को प्राप्त करना इस बात का तक़ाज़ा करता है कि इन्सान अल्लाह तआला को पहचाने और इस के साथ एक सम्बन्ध पैदा करे क्योंकि इस्लाम के अनुसार अल्लाह तआला की सिफ़ात में से एक सिफ़त यह भी है कि वह अमन तथा शान्ति स्त्रोत है।

रसूल करीम ने अपने अनुयायियों से कई बार फ़रमाया कि वे रहम-दिल बनें और एक दूसरे का ख़्याल रखने वाले हूँ और एक दूसरे पर सलामती भेजने वाले हूँ

इस्लाम के संस्थापक ने एक सुनहरी उसूल प्रदान फ़रमाया कि एक वास्तविक मुसलमान को चाहिए कि वह दूसरों के लिए भी वही पसंद करे जो अपने लिए पसंद करता है

मेरे निकट इस सादा परन्तु इंतिहाई गहरे बिन्दु पर सिर्फ मुसलमान ही नहीं बल्कि दूसरे भी अनुकरण करने वाले हों तो यह समाज के लिए स्थायी अमन का माध्यम साबित होगा।

अगर हम अपनी ज़ाती ज़िन्दगियों और सामूहिक सतह पर वास्तविक अमन चाहते हैं तो सबसे अहम यह बात है कि हम दूसरों के लिए वही पसंद करें जो अपने लिए करते हैं

न्यायप्रिय और पक्षपात रहित इतिहासकार इस बात की गवाही देते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कभी भी अत्याचार जारी नहीं रखा और न किसी के अधिकार लिए किए बल्कि हर अवसर अमल वाली , रवादारी और दूसरों के अधिकार पूरे करने की शिक्षा दी।

28 सितम्बर 2019 दिनांक शनिवार दौरा हॉलैंड के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का ग़ैर मुस्लिम मुअज़्ज़िज़ मेहमानों के सामने इस्लाम की अमन देने वाली शिक्षाओं पर आधारित ईमान वर्धक ख़िताब

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

25 सितम्बर 2019 ई (दिनांक बुध)

इस्लामाबाद टेलफ़ोर्ड से रवाना होना और मस्जिद बैयतुल नूर(ननस्पैट हॉलैंड में पधारना)

जमाअत अहमदिया के नए मर्कज़ इस्लामाबाद (यू.के) से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यह दूसरा दौरा था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ हॉलैंड, फ्रांस और जर्मनी के सफ़र पर रवाना होने के लिए प्रोग्राम के अनुसार सुबह 9 बजकर 50 मिनट पर अपनी रिहायश गाह से बाहर पधारे। हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए सुबह से ही मर्द तथा औरतें रिहायशी हिस्सा के बाहरी सेहन में जमा थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए लोगों के बीच पधारे। हर एक ने अपने प्यारे आक़ा का दर्शन किया और लाभ पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सामूहिक दुआ करवाई और अपना हाथ बुलंद करके सब हाज़िरीन को अस्सलामो अलैकुम कहा। इस के बाद पाँच गाड़ियों पर आधारित क़ाफ़िला बर्तानिया के एक तटीय शहर Dover की तरफ़ रवाना हुआ

Dover बर्तानिया की एक प्रसिद्ध बंदरगाह है। लंदन और उसके इर्दगिर्द के क्षेत्रों में आबाद लोग यूरोप का सफ़र ferries के द्वारा इसी बंदरगाह से करते हैं Dover शहर से 11 मील पहले Folkstone के इलाक़ा में वह प्रसिद्ध Channel Tunnel है जो बर्तानिया और फ्रांस के तटीय क्षेत्रों को आपस में मिलाती है। इस सुरंग के द्वारा कारें और अन्य गाड़ियां के द्वारा ट्रेन फ्रांस के तटीय शहर Calais तक पहुँचती हैं। आज उसी चैनल टनल के द्वारा सफ़र का प्रोग्राम था। इस्लामाबाद (यूके) से आदरणीय मन्सूर अहमद शाह साहिब नायब अमीर यू के, आदरणीय अताउल मुजीब राशिद साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज यूके, आदरणीय मुबारक अहमद ज़फ़र साहिब ऐडीशनल वकीलुल माल, आदरणीय नासिर इनाम साहिब प्रिंसिपल जामिया अहमदिया यूके, आदरणीय अख़लाक अहमद अंजुम साहिब (वकालत तबशीर और आदरणीय नायब सदर साहिब मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया यूके, मुहतमिम उमूमी मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया यूके अपनी ख़ुद्दाम सिक्योरिटी टीम के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ को अलविदा कहने के लिए चैनल टनल तक क़ाफ़िला के साथ आए थे। लगभग एक घंटा चालीस मिनट के सफ़र के बाद साढ़े ग्यारह बजे चैनल टनल आई। इस्लामाबाद से साथ आने वाले लोगों ने अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहा

इस के बाद इमीग्रेशन और अन्य सफ़री मामलों की पूर्णता के बाद कुछ वक़्त के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ स्पेशल लाऊंज में तशरीफ़ ले आए। लगभग बारे बज कर पंद्रह मिनट पर क़ाफ़िला की गाड़ियां ट्रेन पर बोर्ड की गईं। ट्रेन बारा बज कर तीस पर 140 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ़्तार से फ्रांस के तटीय शहर Calais के लिए रवाना हुई। इस सुरंग की लंबाई 31 मील है। जिस में से 24 मील का हिस्सा समुंद्र की तह के नीचे है। इस सुरंग का सब से गहरा हिस्सा समुंद्र की तह से 75 मीटर अर्थात 250 फुट नीचे है। अब तक किसी भी समुंद्र के नीचे बनने वाली टनल में से यह दुनिया की सबसे बड़ी टनल (tunnel) है। लगभग आधा घंटा के सफ़र के बाद फ्रांस के स्थानीय वक़्त के अनुसार दोपहर दो बजे फ्रांस के शहर Calais पहुंचे। फ्रांस का समय बर्तानिया के वक़्त से एक घंटा आगे है।

ट्रेन रुकने के बाद लगभग पाँच मिनट के ठहराव से गाड़ियां ट्रेन से बाहर आएं और मोटरवे पर सफ़र शुरू हुआ। पहले से तय प्रोग्राम के अनुसार यहां से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक पैट्रोल पंप के पार्किंग एरिया में जमाअत फ्रांस से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का स्वागत करना था। इस इलाक़ा से गुज़रते हुए बिना रुके सफ़र आगे सफर रहा।

प्रोग्राम के अनुसार कुछ किलोमीटर का सफ़र तय करने के बाद मोटरवे पर ही Calais के आसपास के इलाक़ा Coquelles के एक होटल The Orignals Human Hotel & Resort में नमाज़ ज़ुहर तथा असर की अदायगी और दोपहर के खाने का प्रबन्ध किया गया था। जमाअत फ्रांस ने इसका प्रबन्ध किया हुआ था। 2 बजकर 20 मिनट पर यहां पधारे। जैसे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर पधारे तो आदरणीय अमीर साहिब फ्रांस अशफ़ाक़ रब्बानी साहिब ने अपने प्यारे आक़ा को स्वागत कहा और हाथ मिलाया।

फ्रांस से हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए और यहां के समस्त प्रबन्ध के लिए

शेष पृष्ठ 5 पर

विशेष सन्देश

अल्लाह तआला ने हमें दुआ का बड़ा हथियार दिया है हमें इस के द्वारा अल्लाह तआला की पनाह में आने की कोशिश करनी चाहिए।

मैंने आज परामर्श के बाद यही फ़ैसला किया है कि दफ़्तर से ही ख़ुत्बा के स्थान पर एक पैग़ाम की शक्ल में आप से बात कर लूं घरों जमाअत के लोगों को चाहिए कि जमाअत के साथ नमाज़ का प्रबन्ध करें और जुम्अः भी घर के लोग मिलकर पढ़ें मल्फ़ूज़ात में से या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दूसरी किताबों में से या अलफ़ज़ल में से या अलहकम से कोई भी उद्धरण पढ़ कर ख़ुत्बा दिया जा सकता है। और घर के लोगों में से कोई वयस्क लड़का या मर्द भी जुम्अः पढ़ा सकता है और नमाज़ें भी पढ़ा सकता है।

इस से ज्ञान भी बढ़ेगा और इस तरह हुकूमती पाबन्दी के कारण से घर बैठना भी धार्मिक और रूहानी लाभ का कारण होगा। ज्ञान वर्धक लाभ का कारण होगा।

ऐम टी ए पर बड़े अच्छे प्रोग्राम आते हैं कुछ वक़्त उन प्रोग्रामों को भी इकट्ठे बैठ कर देखने कोशिश करें।

हुकूमत ने अवाम की बेहतरी के लिए आपकी सेहत को ठीक रखने के लिए जो हिदायतों दी हैं जो क़ानून बनाए हैं इस की भी पाबंदी करें।

सब से बढ़ कर दुआओं की तरफ़ बहुत ध्यान दें। दुआओं से अल्लाह तआला के फ़ज़ल को हम जज़ब कर सकते हैं और अपनी रुहानी और जिस्मानी हालत को सेहत मंद कर सकते हैं।

अपने घरों में नमाज़ बाजमाअत की आदत डालें,बच्चों को यह ज्ञान होगा कि नमाज़ें पढ़ना ज़रूरी हैं और बाजमाअत पढ़ना ज़रूरी हैं और आजकल के हालात की वजह से हम मस्जिद नहीं जा सकते लेकिन इस फ़र्ज़ को अपने घरों में निभाना ज़रूरी है, इस को पूरा करना ज़रूरी है,इस तरफ़ खासतौर ध्यान दें।

अल्लाह ताला इस महामारी से दुनिया को जल्द पाक करे और सब दुनिया को इन्सानियत के तक़ाज़े पूरे करने वाला बनाए और सब ख़ुदा ताला को पहचानने वाले हों।

विशेष सन्देश सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 मार्च 2020 ई. स्थान - इस्लामाबाद (सिर्रे) यू. के

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

आजकल वाइरस की जो महामारी फैली हुई है इस की वजह से हुकूमत ने पाबंदियां लगाई हैं दुनिया में बहुत सारी हुकूमतों ने और यहां बर्तानिया की हुकूमत ने भी कि मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ अदा नहीं हो सकती या अगर हो सकती है तो दो या कुछ लोगों से अधिक न हों और वे भी क़रीबी लोग हों। अभी क़ानून स्पष्ट नहीं हो रहा। कोई व्याख्या कुछ करता है और कोई कुछ कि यह सिर्फ़ जैसा कि मैंने कहा कि क़रीबी रिश्तेदार हों तभी हो सकता है और कोई कह रहा है कि दोस्त या साथ रहने वाले हों तो भी शामिल हो सकते हैं। बहरहाल इन हालात में बाक़ायदा जब तक स्पष्ट नहीं हो जाता जुम्अः अदा नहीं किया जा सकता क्योंकि जुम्अः में भी कुछ बातें स्पष्ट होने वाली हैं। इस लिए मैंने आज परामर्श के बाद यही फ़ैसला किया है कि दफ़्तर से ही ख़ुत्बा के स्थान पर एक पैग़ाम की शक्ल में आपसे बात कर लूं और सम्बोधित हो जाऊं। जुम्अः बाक़ायदा न पढ़ा जाए।

जुम्अः के दिन एम टी ए पर ख़ुत्बा सुनना समय के ख़लीफ़ा का ख़ुत्बा सुनना ऐसा है कि जिसकी अब लोगों को आदत पड़ चुकी है। अगर आज इस वक़्त मैं जमाअत से सम्बोधित न हुआ तो लोगों को कई बार मायूसी भी होती है और फिर इस के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की धारणाएं भी शुरू हो जाती हैं इस लिए मैंने यही बेहतर समझा कि किसी न किसी रंग में जमाअत से सम्बोधित हो जाऊं और इस के लिए यही तरीक़ा धारण किया गया कि दफ़्तर से बैठ कर एक पैग़ाम की सूरत में आपसे सम्बोधित हो जाऊं।

बहरहाल जैसा कि मैंने कहा आज जो जुम्अः है वे हम तो नहीं पढ़ेंगे और भविष्य के लिए इंशा अल्लाह क्या तरीका धारण करना है वह इंशा अल्लाह तआला बता दिया जाएगा। लंबा समय हम जुम्अः छोड़ भी नहीं सकते। मेरा जमाअत से जैसा कि मैंने कहा सम्पर्क भी ज़रूरी है और आजकल के हालात में खासतौर पर और भी अधिक ज़रूरी है इस लिए वकीलों और सम्बन्धित लोगों के साथ परामर्श के बाद इंशा अल्लाह उस का हम हल निकाल लेंगे।

जमाअत के सदस्यों को भी मैं यह कहूँगा कि जैसा कि जहां मस्जिद में आने पर हुकूमत ने इस बीमारी की वजह से पाबंदी लगाई है या पाबंदी तो नहीं लगाई जैसे यहां यू के में यह है कि अकेले तौर पर मस्जिद में आकर नमाज़ पढ़ सकते हैं या कुछ फ़ैमिली सदस्य भी आकर नमाज़ पढ़ सकते हैं लेकिन वहां यही है कि दूरी इतनी हो कि जो हुकूमत ने बताया कि आपस में क़रीबी सम्पर्क न हो लेकिन इस के बावजूद बाजमाअत नमाज़ इस तरह नहीं पढ़ी जा सकती कि सारे इकट्ठे हो कर आएं। तो इस तरह की अवस्था में घरों में जमाअत के लोगों को चाहिए कि बाजमाअत नमाज़ का प्रबन्ध करें और जुम्अः भी घर के लोग मिलकर पढ़ें और मल्फ़ूज़ात में से या जमाअत की किताबों में से या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दूसरी किताबों में से या अलफ़ज़ल में से या अलहकम से या किसी और रिसाले से कोई भी उद्धरण पढ़ कर ख़ुत्बा दिया जा सकता है और घर के लोगों में से कोई बालिग़ लड़का या मर्द जुम्अः भी पढ़ा सकता है और नमाज़ें भी पढ़ा सकता है। जुम्मओं को बहरहाल लंबा अरसा छोड़ा नहीं जा सकता।

जब घरों में लोग जुम्अः पढ़ाएँगे और इस की तैयारी करेंगे तो ख़ुत्बा के लिए अध्ययन करेंगे इस से ज्ञान भी बढ़ेगा और यूं हुकूमत की पाबंदी की वजह से घर बैठना भी धार्मिक और रुहानी लाभ का कारण हो जाएगा। इल्मी लाभ का कारण हो जाएगा बल्कि अलहकम ने आजकल जो लोगों की राय का सिलसिला शुरू किया है कि हम इस पाबंदी की वजह से घर बैठ कर किस तरह वक़्त गुज़ारते हैं इस में अक्सर लोग यह लिख रहे हैं कि जमाअत की, क़ुरआन और हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों और जमाअत का लिट्रेचर पढ़ कर हम अपने ज्ञान में वृद्धि कर रहे हैं और बहुत सी प्रतिक्रियाएं तो आजकल विभिन्न दुनियावी साईटस पर दुनियादार भी कर रहे हैं कि इस कारण से हमें भी अपनी घरेलू ज़िन्दगी को अपनी हालतों को बेहतर करने की तौफ़ीक़ मिल रही है और हमारी घरेलू ज़िन्दगी वापस आ गई है। अतः हमें भी अपनी घरेलू ज़िन्दगी को अपनी हालतों को सँवारते हुए और बच्चों की तर्बीयत करते हुए गुज़ारने की कोशिश करनी चाहिए। एम टी ए पर बड़े अच्छे प्रोग्राम आते हैं। कुछ समय इन प्रोग्रामों को भी इकट्ठे बैठ कर देखने की कोशिश करें।

और इस के इलावा हुकूमत ने अवाम की बेहतरी के लिए जैसा कि पहले भी मैं कह चुका हूँ आपकी सेहत क़ायम रखने के लिए जो हिदायतें दी हैं जो क़ानून बनाए हैं इस की भी पूरी पाबंदी करें और सबसे बढ़कर जैसा कि मैंने पिछले ख़ुत्बों में कहा

था कि दुआओं की तरफ़ बहुत ध्यान दें। दुआओं से अल्लाह तआला के फ़ज़ल को हम जज़ब कर सकते हैं और अपनी रुहानी और जिस्मानी हालत को सेहत मंद कर सकते हैं और यही हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार-बार नसीहत फ़रमाई है और ऐसे हालात में भी यही नसीहत फ़रमाई है कि सबसे ज़्यादा ज़रूरी बात यही है कि ख़ुदा तआला से गुनाहों की माफ़ी चाहें। दिल को साफ़ करें और नेक कामों में व्यस्त हो जाएं। अल्लाह तआला ने हमें दुआ का एक बहुत बड़ा हथियार दिया है। हमें इस के द्वारा अल्लाह तआला की पनाह में आने की कोशिश करनी चाहिए और इस तरफ़ ध्यान देना चाहिए।

जहां तक जुम्अ: न पढ़ने का सवाल है कुछ हालात में बाजमाअत नमाज़ और जुम्अ: की कुछ हदीसों से भी वज़ाहत होती है कि ये छोड़े जा सकते हैं जैसे बुख़ारी की एक हदीस है कि हज़रत इब्न अब्बास रज़ि ने बारिश वाले दिन में अपने मुअज़्ज़न से फ़रमाया कि तुम तुम أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ और أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللّٰهِ कहो तो उस के बाद حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ نہ कहना बल्कि صَلُّوْا فِي بُيُوْتِكُمْ कि अपने घरों में नमाज़ पढ़ो के अलफ़ाज़ कहना। अत: यह बात मानो लोगों को नई लगी और उन्होंने इस पर आश्चर्य किया। इस पर हज़रत इब्न अब्बास रज़ि ने फ़रमाया कि यही काम उन्होंने अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी किया है जो मुझसे बेहतर थे। यद्यपि जुम्अ: पढ़ना ज़रूरी है मगर मैं नापसंद करता हूँ कि मैं तुम लोगों को इस तकलीफ़ में डालूं कि तुम कीचड़ और फिसलन में चलो।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल अल्जुम्अ: बाबुर रुख़सत हदीस 901)

मुस्लिम में भी यह रिवायत कुछ शब्दों की तबदीली के साथ इस तरह आई है हज़रत इब्न अब्बास से रिवायत है कि उन्होंने बारिश वाले दिन में अपने मुअज़्ज़न से फ़रमाया कि तुम أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللّٰهِ और أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ कहो तो उस के बाद حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ نہ कहना बल्कि صَلُّوْا فِي بُيُوْتِكُمْ कि अपने घरों में नमाज़ पढ़ो के शब्द कहना। रावी कहते हैं कि लोगों को यह बात नई लगी तो हज़रत इब्न अब्बास ने फ़रमाया कि क्या तुम इस बात पर आश्चर्य करते हो। यह काम उन्होंने किया था जो मुझसे बेहतर थे। यद्यपि जुम्अ: पढ़ना ज़रूरी है मगर मैं इसे पसंद करता हूँ कि तुम्हें इस हाल में बाहर निकालूं कि तुम कीचड़ और फिसलन में चलो।

(सहीह मुस्लिम किताबुस्सलात बाब अस्सलात फिर्रहाल हदीस 699)

अल्लामा इमाम नौवी इस हदीस की व्याख्या में लिखते हैं कि और इस हदीस में बारिश इत्यादि की मजबूरी के आधार पर जुम्अ: को साकित करने की दलील मौजूद है और यही मसलक हमारा है। वह लिखते हैं वह कि यही मसलक हमारा है और दूसरे फ़ुक़हा का है जबकि इमाम मालिक का मॉक़फ़ इस के ख़िलाफ़ है। वालल्लाहो अअलमो बिस्सवाब।

(अल्मिन्हाज शरह सहीह मुस्लिम भाग 5 पृष्ठ 208 किताबुस्सलात बाब अस्सलात फिर्रहाल हदीस 699 प्रकाशन अल्मिस्रयत बिल अज़हर 1347 हिजरी)

इसी तरह फ़ुक़हा ने जुम्अ: और बाजमाअत को छोड़ने के उज़्रों में ऐसी बीमारी जिसके साथ मस्जिद में हाज़िर होना मुश्किल हो उस को शामिल किया है और इस की दलील अल्लाह तआला के इस इरशाद को क़रार दिया है कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए धर्म में किसी किस्म की तंगी जायज़ नहीं रखी। इसी आधार पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बीमार हुए तो आप मस्जिद जाने से रुक गए और फ़रमाया कि अबूबकर से कहा कि वह लोगों की इमामत कराए। यह सही बुख़ारी में भी है और मुस्लिम में भी है यह हदीस।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल आज़ान बाब अहलल इल्म हदीस 680-681)
(सहीह मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस 419)

इसी तरह किसी बीमारी के पैदा होने से भयभीत आदमी भी माज़ूर क़रार दिया है और इस की दलील हज़रत इब्न अब्बास की वह रिवायत है जिस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उज्र की तफ़सीर ख़ौफ़ और बीमारी से फ़रमाई। यह सुनन अबी दाऊद में लिखा है।

(सुनन अबी दाऊद किताबुस्सलात हदीस 551)

बहरहाल यह बीमारी जिसमें बीमारी फैलने का भी ख़तरा है और जिसके लिए हुकूमत ने भी कुछ नियम और क़ानून बनाए हैं और देश के कानून के अधीन उन पर चलना भी ज़रूरी है इन अवस्थाओं में जमा होना, एक जगह जमा होना और नमाज़ बाजमाअत अदा करना या जुम्अ: पढ़ना मुश्किल है लेकिन जैसा कि मैंने कहा अपने घरों में नमाज़ बाजमाअत की आदत डालें। इस से जहां बच्चों को यह इल्म होगा कि नमाज़ें पढ़ना ज़रूरी हैं और बाजमाअत पढ़ना ज़रूरी है और आजकल के हालात की वजह से हम मस्जिद नहीं जा सकते लेकिन इस फ़र्ज़ को अपने घरों में निभाना ज़रूरी है। इस को पूरा करना ज़रूरी है इस पर खासतौर पर ध्यान दें। कई बार सफ़रों में ऐसे हालात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के भी आए थे। जब आपने जुम्अ: अदा नहीं किया।

(अल्फज़ल दिनांक 24 जनवरी 1942 ई पृष्ठ 1 भाग 20 संख्या 21)

तो बहरहाल बहुत सारी ऐसी रिवायते हैं जिससे इस बारे में भी वज़ाहत होती है कि छूतछात की बीमारियों में जमा होना या बीमारियों में एक दूसरे से मिलना ठीक नहीं है। इस के लिए अलग रहना चाहिए और अलग रखो। बहरहाल जैसा कि मैंने पहले भी कहा हम स्थायी तो यह नहीं छोड़ रहे और इस के लिए अलग से प्रबन्ध भी कर रहे हैं कि घरों में जुम्अ: अदा करें। मैं भी कोई प्रबन्ध करने की कोशिश करूँगा।

अब यह भी ज़रूरी है कि यह दुआ करें कि अल्लाह तआला अपना फ़ज़ल फ़रमाए जैसा कि पहले भी मैंने कहा कि अल्लाह तआला इस महामारी से दुनिया को जल्द पाक करे और सब दुनिया को इन्सानियत के तक़ाज़े पूरे करने वाला बनाए और ख़ुदा तआला को पहचानने वाले हों सब। अल्लाह तआला हम सबको इस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

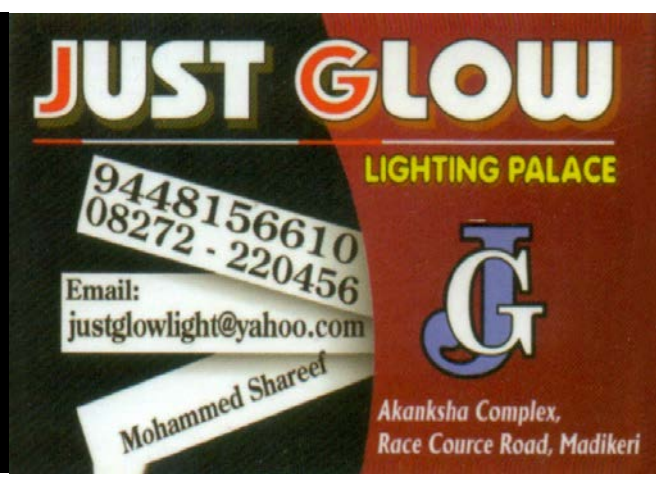

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

आने वाले वफ़द में अमीर साहिब फ्रांस के अतिरिक्त आदरणीय असलम दो बोरी साहिब नायब अमीर जमाअत फ्रांस, आदरणीय फ़हीम अहमद नयाज़ साहिब जनरल सैक्रेटरी, आदरणीय ऐनुल हादी साहिब विभाग समई बसरी, आदरणीय जमीलुर्रहमान सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया फ्रांस, आदरणीय असद इम्तियाज़ साहिब नायब सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया फ्रांस और आदरणीय इम्तियाज़ इफ़्तिख़ार साहिब मुहतमिम उमूमी ख़ुद्दामुल अहमदिया फ्रांस अपनी ख़ुद्दाम की सिक्योरिटी टीम के साथ मौजूद थे

नमाज़ ज़ुहर तथा असर की अदायगी के लिए होटल के एक अलग हाल में प्रबन्ध किया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 2 बजकर 35 मिनट पर तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाऐं। नमाज़ों की अदायगी और दोपहर के खाने के बाद यहां से आगे ननसपेत हॉलैंड के लिए रवाना होना था।

हॉलैंड से आदरणीय अमीर साहिब हॉलैंड आदरणीय हिबतुन्नूर फरहाखन साहिब, आदरणीय अब्दुल हमीद फ़ांद्र फ़ीलदन साहिब नायब अमीर हॉलैंड, आदरणीय नईम अहमद वड़ेच साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज हॉलैंड, आदरणीय मुज़फ़्फ़र हुसैन साहिब जनरल सैक्रेटरी, आदरणीय नासिर अहमद डोगर साहिब सैक्रेटरी सनअत व तजारत, आदरणीय ज़ुबैर अकमल साहिब सैक्रेटरी तालीमुल क़ुरआन वक़्फ़ आरज़ी और सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया उसमान अली साहिब अपनी सिक्योरिटी टीम के साथ होटल में हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए पहुंचे थे।

प्रोग्राम के अनुसार अब यहां से हॉलैंड से आने वाले वफ़द ने क़ाफ़िला को escort करते हुए नन सपीत (हॉलैंड) लेकर जाना था। तीन बज कर चालीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ होटल से बाहर पधारे और सामूहिक दुआ करवाई। इस के बाद क़ाफ़िला नन सपीत हॉलैंड के लिए रवाना हुआ

यहां से नन सपीत की दूरी 390 किलोमीटर है। 55 किलोमीटर का सफ़र तय करने के बाद फ्रांस का बॉर्डर पार कर के बेल्जियम की सीमाओं में दाख़िल हुए। बेल्जियम में 190 किलोमीटर का सफ़र तय करने के बाद बेल्जियम का बॉर्डर पार करके क़ाफ़िला हॉलैंड में दाख़िल हुआ। हॉलैंड में 145 किलोमीटर का और सफ़र तय करके लगभग 8 बजकर 5 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का जमाअत ननसपीत के मर्कज़ बैयतुल नूर में पधारे।

जैसे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर पधारे तो नन सपीत और हॉलैंड की विभिन्न जमाअतों और शहरों से आए हुए जमाअत के लोगों मर्द तथा औरतें और बच्चों, बच्चियों ने अपने प्यारे आक़ा का बड़ा जोश के साथ स्वागत किया। बच्चियां और बच्चे विभिन्न ग्रुपों की सूरत में दुआइया नज़्में और स्वागत गीत पेश कर रहे थे। अक़ीदत और मुहब्बत से हर तरफ़ हाथ बुलंद थे। "अहलन व सहलन व मरहबा या अमीर-उल-मोमिनीन" की आवाज़ें हर तरफ़ से बुलंद हो रही थीं।

आदरणीय अमीर साहिब हॉलैंड, आदरणीय मुबल्लिग़ इंचार्ज साहिब हॉलैंड, आदरणीय हामिद करीम साहिब मुबल्लिग़ नन सपीत, आदरणीय अज़हर अली नईम साहिब सैक्रेटरी अमूरे ख़ारिजा, आदरणीय चौधरी मुबश्शिर अहमद साहिब अफ़्सर जलसा सालाना हॉलैंड ने हुज़ूर अनवर को स्वागत कहा।

इस अवसर पर नन स्पैट के नायब लार्ड मेयर Mr.Van De Berg भी हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए आए हुए थे। इसी तरह जमाअत के मर्कज़ बैयतुन्नूर के पड़ोस में रहने वाले Mr.Jaap भी हुज़ूर अनवर को स्वागत कहने के लिए आए हुए थे। महोदय डच आर्मी में मेजर हैं। इन दोनों ने हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाया।

नायब लार्ड मेयर ने नेक इच्छाओं का इज़हार किया और निवेदन किया कि मेयर ने ख़ुद भी आना था लेकिन वह एक ज़रूरी मीटिंग में शामिल की वजह से नहीं आ सके। महोदय ने निवेदन किया कि हम हफ़्ता के दिन होने वाले प्रोग्राम में भी शामिल होंगे

इस अवसर पर एक बच्चे प्रिय ज़ीशान वलीद ने हुज़ूर अनवर की सेवा में फूल पेश किए और एक बच्ची प्रिया नाजिया असलम ने हज़रत बेगम साहिबा मदज़िलहा आली की सेवा में फूल पेश किए

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद करके सब को अस्सलामो अलैकुम कहा और अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए

अपने प्यारे आक़ा के स्वागत के लिए हॉलैंड की विभिन्न जमाअतों से जमाअत के लोगों मर्द तथा औरतें, नौजवान, बूढ़े, बच्चे और बच्चियां दोपहर से ही जमाअत के मर्कज़ बैयतुन्नूल पहुंचना शुरू हो गए थे। नन सपीत (Nunspeet)की स्थानीय जमाअत के अतिरिक्त Amsterdam, Den Haag,Zwolle,Utrecht, Amstelveen,Zuidoost,ArnhemLieden, Rotterdam,Eindhoven ,Maastricht ,Denbosch, Leuwaarden ,Groningen की जमाअतों से जमाअत के लोगों सफ़र करके नन सपीत पहुंचे थे और सभी अपने प्यारे आक़ा के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। इन सभी ने दर्शन पाया और सभी उन मुबारक और बरकत लम्हों से लाभान्वित हुए।

साढ़े आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ने मस्जिद बैयतुन्नूर में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए हॉलैंड की विभिन्न जमाअतों से जो लोगों मर्द तथा औरतें यहां मस्जिद बैयतुन्नूर पहुंचे थे, इन सभी ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा अपने आक़ा की अनुकरण में पढ़ने का सौभाग्य पाया। उनमें से कुछ पाकिस्तान से यहां पहुंचे थे और उनकी ज़िन्दगी में अपने प्यारे आक़ा की अनुकरण में यह पहली नमाज़ थी। ये लोग अपनी इस सौभाग्य पर बेहद ख़ुश थे और उन मुबारक लम्हों से लाभान्वित हो रहे थे और उन्हें एक नई ज़िन्दगी प्रदान हो रही थी। अल्लाह तआला ये सौभाग्य हम सब के लिए प्रदान फ़रमाए। आमीन

Nunspeet मैं जमाअत के मर्कज़ "बैयतुन्नूर" वसीअ तथा बड़ी इमारतों पर आधारित है। इस का क्षेत्रफल सवा एकड़ है। इस कम्पलैक्स में तीन बड़ी इमारते हैं जो तीन ब्लॉक्स के रूप में हैं।

बलॉक ए (A) तीन मंज़िला है। इस की पहली मंज़िल पर एक बड़ा हाल है जो 1985 ई से 2014 ई तक अर्थात लगभग तीस साल बतौर मस्जिद प्रयोग होता रहा है और इस के अतिरिक्त इस इमारत की पहली, दूसरी और तीसरी मंज़िलों पर 22 कमरे हैं और उन कमरों की एक बड़ी संख्या मेहमानों की रिहायश के लिए प्रयोग होती है। ग़ुस्ल-ख़ाने और जमाअत के किचन इसके अतिरिक्त हैं। लंगर ख़ाना का प्रबन्ध भी इसी इमारत के साथ जुड़ा हुआ है। जमाअत के लाइब्रेरी भी इसी इमारत में है।

दूसरा बलॉक बी (B) भी तीन मंज़िला है। इस की पहली दो मंज़िलों में तीन हाल हैं और तीसरी मंज़िल पर सात गेस्ट हाऊसज़ अर्थात रिहायशी अपार्टमंट्स हैं

तीसरा बलॉक सी (C) है जिसके एक हिस्सा को साल 2014 ई से मस्जिद की शक्ल में तबदील किया गया है और बाक़ायदा महिराब इत्यादि बनाया गया है। इसके अतिरिक्त इस बलॉक में दो दफ़्तरों और एक रिहायशी हिस्सा भी है। इस कम्पलैक्स में इन तीन ब्लॉक्स के अतिरिक्त एक रिहायशी बंगला भी है। यह कम्पलैक्स 1985 ई में ख़रीदा गया था। नन सपीत का इलाक़ा बहुत ख़ूबसूरत है। एक झील के इर्दगिर्द निहायत ख़ूबसूरत जंगलों से घिरा हुआ है और एक शान्ति वाली स्थान है।

साल1985 ई में जब यह जगह ख़रीदी गई थी तो उस वक़्त यहां नन सपीत में सिर्फ एक अहमदी फ़ैमिली निवासी थी। नन सपीत में धीरे-धीरे जमाअत की संख्या बढ़ती गई। साल 2014 ई में नन सपीत की संख्या 155 से बढ़ गई तो इस को दो जमाअतों नन सपीत और Zwolle में विभाजित किया गया। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अब ये जमाअत तेज़ी से तरक़्क़ी कर रही है और अब सिर्फ जमाअत नन सपीत की संख्या140 से बढ़ गई है। जबकि दूसरी क़रीबी जमाअत Zwolle की संख्या 90 से ऊपर है। इन दोनों जमाअतों के अतिरिक्त देश भर की जमाअतों से लोग यहां जमा हैं और एक ईद का दृश्य नज़र आता है। प्रत्येक दिल ख़ुशी तथा प्रशंसा से भरा है। यह दिन बड़े ही मुबारक और बरकतों वाले दिन हैं।

26 सितम्बर 2019 ई (दिनांक जुमेरात)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह छः बजकर तीस मिनट पर मस्जिद बैयतुन्नूर तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्तता रही।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने 2 बजे मस्जिद बैयतुन्नूर में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। पिछले पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार छः बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज प्रोग्राम के अनुसार 40 फ़ैमिलीज़ के174 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सब ही फ़ैमिलीज़ ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाएं

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ ननस्पैट के अतिरिक्त Rotterdam, Almere, Eindhoven, Zwolle, Denbosch, Den Haag, Utrecht से आई थीं। लगभग ये सब ही फ़ैमिलीज़ ऐसी थीं या कुछ फ़ैमिलीज़ का एक हिस्सा ऐसा था जो अपनी ज़िन्दगियों में पहली बार अपने प्यारे आक़ा के दर्शन और मुलाक़ात का सौभाग्य से लाभान्वित हो रहा था और आज का दिन उनकी ज़िन्दगी में बहुत अधिक मुबारक और बरकतों और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों से भरपूर दिन था। इस दिन को और अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के इन लम्हों को ये लोग और उनके बच्चे हमेशा याद रखेंगे। ख़लीफ़तुल मसीह से क़ुरब की ये कुछ घड़ियाँ उनकी सारी ज़िन्दगी का सरमाया हैं। इन्सान की ज़िन्दगी में कुछ लम्हों ऐसे आ जाते हैं जो उस की काया पलट देते हैं। प्यारे आक़ा से क़ुरब के ये कुछ लम्हों यक़ीनन ऐसे ही लम्हों हैं जो एक इन्सान का धर्म भी सँवार जाता है और इस की दुनिया भी सँवार जाती है और एक नई ज़िन्दगी मिलती है।

मुलाक़ात करने वालों में से एक दोस्त इर्फ़ान एजाज़ साहिब (जिनका सम्बन्ध जमाअत दोधा ज़िला सरगोधा से है) ने अपनी भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा: हुज़ूर अनवर को देखकर जो मेरी कैफ़ीयत थी, जो मेरी भावनाएं थी, मैं वर्णन नहीं कर सकता। मेरा जिस्म काँप रहा था। हुज़ूर अनवर ने हम से बड़े प्यार और मुहब्बत के साथ बातें कीं। हमें बहुत सुकून प्रदान हुआ। मुझे रोना आ रहा था। मैंने बड़ी मुश्किल से काबू किया। मेरी आवाज़ काँप रही थी। हुज़ूर अनवर ने मेरे बच्चों को बहुत प्यार किया। बच्चों ने इस इच्छा का इज़्हार किया कि हमने हुज़ूर अनवर के साथ अलग तस्वीर भी बनवानी है और हम ने फ्रेम करवा कर रखनी है। हुज़ूर अनवर ने बहुत शफ़क़त से बच्चों की इच्छा पूरी फ़रमाई और बच्चों ने अपने आक़ा के साथ एक अलग तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

रब्वा से आने वाले दोस्त मुहम्मद सादिक़ नदीम साहिब ने वर्णन किया कि मैं बता नहीं सकता कि हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात ख़ुदा तआला का इतना बड़ा एहसान है कि मैं शुक्र का हक़ अदा नहीं कर सकता। मेरी ज़िन्दगी की एक ही इच्छा थी कि हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हो जाएगी। मैं यहां वीज़ा लेकर आया था। मेरा इसाईलम करने का कोई इरादा न था और मेरा वापस जाने का प्रोग्राम था। लेकिन वीज़ा की सीमा हुज़ूर अनवर की हॉलैंड में आने से पहले ख़त्म हो रही थी। दूसरी तरफ़ में हर सूरत हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात करना चाहता था। और यहां और अधिक रुकने की सूरत सिर्फ़ इसाईलम ही थी। अत: मैंने इसाईलम कर दिया और आज मेरी ज़िन्दगी की इच्छा पूरी हो गई। आज मैं एक ख़ुशनसीब इन्सान हूँ।

सरगोधा से सम्बन्ध रखने वाले इमरान अहमद साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा कि इस वक़्त मेरे लिए बोलना मुश्किल हो रहा है। महोदय की आवाज़ भराई हुई थी। कुछ देर तवक़्क़ुफ़ के बाद कहने लगे उतना सुकून आया है और दिल सन्तोष से भर गया है। हमारा दिल कर रहा था बस हुज़ूर अनवर बातें करते जाएं और हम सुनते जाएं और हुज़ूर को देखते जाएं। हमारी सारी फ़ैमिली ने हुज़ूर अनवर के चेहरा पर नूर ही नूर देखा है। हमारे बच्चे भी बहुत अधिक ख़ुश हैं। हुज़ूर अनवर ने बच्चों को बहुत प्यार दिया है और बच्चों को चॉकलेट भी दी हैं।

एक फ़ैमिली के सरबराह उताउल हई साहिब जिनका सम्बन्ध कश्मीर से था, कहने लगे कि मुझ से बोला नहीं गया। अपने आप रोने को दिल चाहा। चेहरे पर नूर ही नूर था। मैं सोच भी नहीं सकता था कि ज़िन्दगी में कभी ख़ुदा तआला के प्रतिनिधि से मेरी मुलाक़ात होगी। आज मुझ पर ख़ुदा तआला का इतना एहसान है कि मैं सारी ज़िन्दगी शुक्र अदा नहीं कर सकता। ख़ुदा के प्रतिनिधि से मिला हूं। यह मेरी ज़िन्दगी की कोई साधारण घटना नहीं और मैं उसे कभी नहीं भुला सकता।

मास्टर मक़सूद अहमद साहिब जिन का सम्बन्ध कोइटा से था कहने लगे कि इस वक़्त मेरा दिल भावनाओं से भरा हुआ है। वर्णन नहीं कर सकता। मुझे समझ नहीं आ रही कि क्या वर्णन करूँ। मैं बताना चाहता हूं कि आज हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के बाद मेरी समस्त परेशानियाँ ख़त्म हो गई हैं। समस्त रुकावटें दूर हो गई हैं। मेरा दिल हल्का हो गया है और मुझे बहुत सुकून मिला है। आज की मुलाक़ात मेरी ज़िन्दगी की एक प्रमुख घटना है। ख़ुदा तआला का शुक्र है कि ज़िन्दगी में मुलाक़ात का अवसर मिल गया मैं MTA पर देखा करता था कि लोग हुज़ूर अनवर के दर्शन के लिए क़तारों में खड़े हैं। मैं इस वक़्त सोचा करता था कि यह कैसे संभव हो सकता है कि मैं भी उन लोगों में शामिल हूँ। आज अल्लाह तआला ने मेरे दिल की मुराद पूरी कर दी कि मैंने न सिर्फ हुज़ूर अनवर को देखा बल्कि हुज़ूर से मुलाक़ात करने और हुज़ूर अनवर से बातें करने वालों में शामिल हो गया। यही मेरी ज़िन्दगी का क़ीमती सरमाया है

रब्वह से आने वाले दोस्त तारिक़ महमूद साहिब जब अपनी फ़ैमिली के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य से लाभान्वित हो कर दफ़्तर से बाहर आए तो पूछने पर कहने लगे कि हम तो एक अरसा से इस दिन के लिए तरस रहे थे। बड़े ख़ुश-क़िस्मत लोगों को ये दिन नसीब होता है। मेरी फ़ैमिली अपनी ज़िन्दगी में पहली बार ख़लीफ़तुल मसीह को अपने सामने इंतिहाई क़रीब से देख रही थी। मेरे तीन बच्चे वक़्फ़ नौ में हैं। एक बेटी वक़्फ़ नौ में नहीं थी वह रो पड़ी कि मैं वक़्फ़ नौ नहीं हूँ। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए उस की दिलदारी फ़रमाई और फ़रमाया तुम डाक्टर बनो।

कहने लगे कि मैंने विभाग से सोशल लेनी बंद कर दी है। मैंने इस बात का हुज़ूर अनवर से ज़िक्र किया कि इस तरह मैंने सोशल लेनी बंद कर दी है। इस पर विभाग ने कहा कि तुम्हें न लेने से बहुत मुश्किलें होंगी। इस पर मैंने उन्हें बताया कि हमारे इमाम ने कहा है कि ख़ुद कमा करो, काम करके गुज़ारा करें। इसलिए मैं अब काम करके गुज़ारा करूँगा। कहने लगे कि इस पर हुज़ूर अनवर ने मुझे बहुत दुआएं दें। अब मुझे कोई फ़िक्र नहीं, मेरे सब काम ख़ुदा के फ़ज़्ल से हो जाएंगे।

आदरणीय सुलतान अहमद साहिब जो कि रब्वह से आए हैं कहने लगे कि आज ख़ुदा तआला का बड़ा फ़ज़्ल हुआ है। मैं बहुत ख़ुश हूँ। आज मेरी ज़िन्दगी की पहली मुलाक़ात थी। पाकिस्तान में रहते हुए इस बात का विचार भी नहीं था कि कभी ज़िन्दगी में हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हो जाएगी। हुज़ूर अनवर को MTA पर देखा करते थे। आज में बहुत ख़ुशनसीब इन्सान हूँ और इस सौभाग्य पर बहुत ख़ुश हूँ।

तरस्सौ इनायत मेहर साहिब जिनका सम्बन्ध गुजरात पाकिस्तान से है। 1999 ई मैं बैअत की थी और अपनी फ़ैमिली में अकेले अहमदी हैं। उन्होंने वर्णन किया कि हुज़ूर अनवर को देखकर यक़ीन नहीं आता था कि हम हुज़ूर अनवर के इतना क़रीब हैं और हुज़ूर को देख रहे हैं। ख़लीफ़तुल मसीह के सामने अपने भावनाओं पर कंट्रोल करना बड़ा मुश्किल होता है। हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक पर नज़र पड़ते ही दिल करता है कि हुज़ूर अनवर को देखते रहें। नज़र हटाने को दिल नहीं चाहता। मैं जलसा जर्मनी में गया था और हमेशा अगली सफ़ों में बैठता था ताकि हुज़ूर अनवर को देखता रहूं। जितना भी देखूं दिल नहीं भरता। आज मैं एक ख़ुशनसीब इन्सान हूँ कि अपने इंतिहाई क़रीब से हुज़ूर अनवर का दर्शन नसीब हुआ है। यह घड़ी क़िस्मत वालों को ही नसीब होती है।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 8 बजकर 15 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने बैयतुन्नूर तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए

27 सितम्बर 2019 ई दिनांक जुम्अतुल मुबारक

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े 6 बजे बैयतुन्नूर में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे। आज जुम्अतुल मुबारक का दिन था। आज अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत अहमदिया हॉलैंड के 39 वें जलसा सालाना का आरम्भ हो रहा था और आज जलसा सालाना का पहला दिन था। जलसा सालाना के आयोजन के लिए जमाअत के मर्कज़ बैयतुन्नूर के क़रीब ही एक स्पोर्टस हाला Vossenberg प्राप्त किया गया था और यहां मर्दाना जलसा गाह बनाया गया था जब कि बैयतुन्नूर के सेहन में मार्कीज़ लगा कर लजना के जलसा गाह का प्रबन्ध किया गया था। हॉलैंड की समस्त जमाअतों से जमाअत के लोग सुबह से ही बैयतुन्नूर पहुंचना शुरू हो गए थे। एक संख्या जुम्मेरात की शाम तक पहुंच चुकी थी लेकिन बड़ी संख्या में लोग जुम्अ: की सुबह से पहुंचे हैं। हॉलैंड की जमाअतों के अतिरिक्त जर्मनी, बर्तानिया, बेल्जियम, इटली, गोइटे माला, ऑस्ट्रिया, पाकिस्तान, मालटा , फिनलैंड, स्विटज़रलैंड, स्वीडन, डेनमार्क, नार्वे, दुबई, अमरीका, कैनेडा और फ्रांस के देशों से जमाअत के लोग और फ़ैमिलीज़ जलसा सालाना हॉलैंड में शामिल करने के लिए पहुंचे।

यूरोप के कुछ देशों से कुछ लोगों और फ़ैमिलीज़ चार सौ सदस्य पाँच सौ किलोमीटर तक का बड़ा लंबा सफ़र तय कर के जलसा में शामिल होने के लिए हॉलैंड पहुंचे। जुम्अ: के आरम्भ से पहले ही मर्दाना जलसा गाह और लजना का जलसा गाह शामिल होने वालों से भरे हुए थे और हाज़री दो हज़ार पाँच सौ चालीस से पार कर चुकी थी

प्रोग्राम के अनुसार 1 बजकर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ झण्डा लहराने के आयोजन के लिए पधारे। "बैयतुन्नूर" के सेहन में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने लवाए अहमदियत लहराया जब कि अमीर साहिब हॉलैंड ने देश का क़ौमी झण्डा लहराया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई।

झण्डा लहराने के आयोजन के बाद दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ ले आए और ख़ुत्बा जुम्अ: इरशाद फ़रमाया जिस के साथ जलसा सालाना हॉलैंड का उद्घाटन अनुकरण योग्य नज़र आया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का यह ख़ुत्बा जुम्अ: दो बज कर पच्चास मिनट तक जारी रहा और MTA इंटरनैशनल पर सीधा प्रसारित हुआ। अरबी और यहां की स्थानीय डच भाषा में यहां स्थानीय तौर पर साथ साथ अनुवाद भी हुआ। ख़ुत्बा जुम्अ: के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने नमाज़ जुम्अ: के साथ नमाज़ अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

आमीन का आयोजन

पिछले-पहर भी हुज़ूर अनवर दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे। प्रोग्राम के अनुसार आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में पधारे और आमीन का आयोजन का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए निम्नलिखित 27 बच्चों से क़ुरआन करीम की एक-एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

अज़ीज़ फ़हद बशीर चौधरी, हिज़्कील अहमद, शाबल अहमद, अलतमाश रोशन क़ुरैशी, ज़ुलकिफ़ल Compier ज़ुलक़ुरनैन Compier मुहम्मद बासिल आरिफ़, शरजील अहमद, ज़मान चौधरी, रयान चौधरी, मुहम्मद जरी अल्लाह, अन्सर अहमद, हस्सान अहमद, तानीस अहमद बदर, हाज़िक़ अहमद, अहसन अहमद, रयान अहमद सिद्दीक़ी, ज़ीशान मुहम्मद, अतहर अहमद, शायान अहमद, रमीज़ अब्बास क़ाज़ी, मेराज अहमद शायान, मुवह्हिद अहमद अकमल, ज़ीशान वहीद, हसीब अहमद, कामरान एजाज़, इमरान एजाज़

आमीन के आयोजन में शामिल होने वाले ये ख़ुश-नसीब बच्चे हॉलैंड की निम्नलिखित जमाअतों से थे।

Zwolle, Nunspeet, Almere, Amstelveen, Arnhem ,Zoetermeer ,DenHaag ,Maastricht, Eindhoven, Rotterdam

आमीन का आयोजन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

28 सितम्बर 2019 ई (दिनांक हफ़्ता)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छ: बजे जलसा गाह में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई और हिदायतों से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे। आज के प्रोग्राम के अनुसार औरतों के जलसा गाह में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का लजना जलसा से ख़िताब था

आज लजना के जलसा गाह में सुबह के जलसा का आरम्भ 10 बजकर 40 मिनट पर हज़रत बेगम साहिबा मदज़िल्हा आली की अध्यक्षता में हुआ। जो दोपहर बारे बजे तक जारी रहा। इस सैशन में तिलावत क़ुरआन करीम और इस के उर्दू अनुवाद के अतिरिक्त एक नज़म और दो तक़रीरें हुईं। एक तक़रीर उर्दू ज़बान में थी और दूसरी तक़रीर डच ज़बान में थी। प्रोग्राम के समाप्न के बाद हुज़ूर अनवर के आने तक के अरसा में भी कुछ लजना मैंबर्ज़ ने नज़्में प्रस्तुत कीं।

प्रोग्राम के अनुसार दोपहर साढ़े बारे बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ लजना जलसा गाह में पधारे। सदर लजना इमाउल्लाह हॉलैंड नाज़िमा आला ने अपनी नायब नाज़मात आला के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत किया और औरतें ने अह्लन व सहलन व मरहबा कहते हुए अपने प्यारे आक़ा को स्वागत कहा

इजलास की कार्रवाई का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो प्रिया रिहाना वहाब ने की। इस के बाद उस का उर्दू अनुवाद प्रिया मारिया हुस्न ज़ुबैर ने पेश किया। इस के बाद प्रिया सूबिया लग़ारी साहिबा ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम

वह पेशवा हमारा जिस से है नूर सारा
नाम उस का है मुहम्मद दिलबर मेरा यही है

ख़ुश अल्हानी से पेश किया

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तालीमी मैदान में उच्च सफलता प्राप्त करने वाली 21 छात्राओं को सर्टिफिकेट प्रदान फ़रमाए और हज़रत बेगम साहिबा मदज़िलहा आली ने इन छात्राओं को मैडल पहनाए

तालीमी ऐवार्ड प्राप्त करने वाली इन ख़ुशनसीब छात्राओं के नाम निम्नलिखित हैं

नौरीन रज़ा साहिबा (ऐम एस सी फिज़िक्स) पंजाब यूनीवर्सिटी लाहौर

नौरीन रज़ा साहिबा(एम फिल फिज़िक्स) पंजाब यूनीवर्सिटी लाहौर

अमतुल मुजीब नय्यर साहिबा (ऐम एस सी Environmental ब्यालोजी) नाईजीरिया

तानीया सईद Primary Education बोर्ड की परीक्षाओं में 98 प्रतिशत नम्बर

रोशनी नईम (बी एस सी माईक्रो ब्यालोजी) जिन्नाह यूनीवर्सिटी कराची

मनाल बशीर Primary Education बोर्ड की परीक्षाओं में 100 प्रतिशत नम्बर

नोमाना ताहिर(एफ़ एससी परी इंजीनीयरिंग) नुसरत जहां कॉलेज रब्वह

ज़नीरा चौधरी वड़ैच (बी एससी इंटरनैशनल कम्यूनीकेशन ऐंड मीडिया) UTRECHT हॉलैंड

बुशरा बशारत (एमफिल कैमिस्ट्री) सरगोधा यूनीवर्सिटी पाकिस्तान

उरूज खरल (बी एस सी) Geneeskunde ERAMUS यूनीवर्सिटी

नाइला नीलोफ़र हफ़ीज़(ऐम एस सी Tandheelkunde VRIJE यूनीवर्सिटी) एम्सटरडैम

ज़ल हुमा अब्बासी एफ़ एस सी परी इंजीनीयरिंग फैसलाबाद

Irma Marie-Louise(ऐम एससी Geneeskunde) यूनीवर्सिटी Van Maatricht

फ़ायका अहमद(बी एस सी सिवल इंजनीयरिंग) UAE यूनीवर्सिटी

तय्यबा सादिया(बी एस सी साईकालोजी) सरगोधा यूनीवर्सिटी पाकिस्तान

Emine Rustemi (प्राइमरी एजोकेशन बोर्ड की परीक्षा में 100 प्रतिशत नम्बर)

शाफ़िया महमूद GCSE 8 ए स्टार और 5 ए) ब्रंट ववडहाई स्कूल यू के

मारिया चौधरी(बी एस सी Zoology) पंजाब यूनीवर्सिटी लाहौर

अदीला नईम चौधरी (बी एस सी एक्सरसाइज़ ऐंड हेल्थ फ़िज़यालोजी) कैलगरी यूनीवर्सिटी कैनेडा

नज़रीन Sahebali(बी ए मिडल इस्टर्न स्टडीज़)Leidenयूनीवर्सिटी

रोवियतुन्नूर Compier (Exceptional Performance प्राइमरी एजूकेशन)

तालीमी ऐवार्ड की इस आयोजन के बाद 12 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ख़िताब फ़रमाया।

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरत फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने इस ज़माना में जो नए आविष्कार इन्सान को करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई है उन में यह एक आविष्कार भी बड़ी अच्छी ईजाद है कि टीवी पर , बड़ी स्क्रीन पर औरतों में भी ज़रूरत के अनुसार मर्दों की तरफ़ से आवाज़ और तस्वीर विभिन्न तक़रीरों और प्रोग्रामों की पहुंच जाती है और जब भी मर्दों में समय का ख़लीफा का ख़िताब होता है तो औरतों में भी टीवी और स्क्रीन के द्वारा यह सुना और देखा जा सकता है और यह चीज़ औरतों के लिए काफ़ी भी होनी चाहिए। लेकिन फिर भी जलसों के जो प्रोग्राम रखते हैं वह समय के ख़लीफ़ा का ख़िताब औरतों में भी रखते हैं क्योंकि औरतों की तरफ़ से यह मांग होती है कि समय के ख़लीफ़ उन के जलसा में आकर सीधा उनसे सम्बोधित हों। लज्ना की इस मांग को पूरा करने के लिए मैं भी प्राय छोटी जमाअतों के जलसों पर भी लजना से सीधा ख़िताब करता हूँ। और आज इस वक़्त इसलिए यहां आया हूँ कि आप से सीधा सम्बोधित हूं। हम क़ुरआन करीम में देखते हैं कि प्राय मर्दों को जिन बातों के करने का हुक्म दिया गया है उनको नसीहत की गई है इन में औरतें भी शामिल हैं। इसलिए बुनियादी बातों के बारे में औरतों के लिए भी मर्दों का ख़िताब ही काफ़ी होना चाहिए। अगर हक़ीक़त में इन नसीहतों की तरफ़ , इन बातों की तरफ़ अनुकरण करने की तरफ़ ध्यान हो और यहां कुछ बातें ऐसी भी हैं जो जहां अल्लाह तआला ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को अलग अलग सम्बोधित भी किया लेकिन बात एक ही थी। क़ुरआन करीम में कुछ हिदायतें ऐसी हैं जिन में सिर्फ औरतों को सम्बोधित किया गया है। बहरहाल अगर बुनियादी बातों पर ध्यान हो जाए और उन पर अनुकरण हो जाए तो मर्दों और औरतों के बारे में जो कुछ आदेश हैं उनकी व्याख्याएं हैं उनकी तफ़सील है या कुछ हुक्म मर्दों और औरतों के लिए उनको अलग अलग सम्बोधित कर के दिए गए हैं। प्राय मज़बूत बुनियाद की वजह से अगर अनुकरण करने की नीयत हो तो बुनियाद बन जाती है और इस बुनियाद की वजह से जो बातें मर्दों को सम्बोधित कर के की जाती हैं औरतें भी अपने आप उन पर अनुकरण करने लग जाएँगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अगर बुनियादी बातों पर अनुकरण नहीं जो ख़ुत्बे मैं वर्णन की जातीं हैं। मर्दों की तक़रीरों में वर्णन की जाती हैं। प्राय ख़िताबों में वर्णन की जाती हैं तो यह अलग तक़रीरें भी जो लजना में

की जाती हैं उनका भी कोई लाभ नहीं। लेकिन बहरहाल यह भी सही है कि किसी को सीधा सम्बोधित कर के बात की जाए तो इस का अधिक प्रभाव होता है और इसी लिए ख़ुलफ़ाए वक़्त का यह तरीक़ा रहा है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कई बार बल्कि प्राय बार यही होता है कि औरतों के ख़िताबों में भी कुछ ऐसी बातें वर्णन की जाती हैं जो मर्दों के लिए भी एक जैसी ज़रूरी होती हैं। लेकिन जैसा कि मैंने कहा औरतों से सीधा ख़िताब का लाभ भी होता है। और प्राय समय ये लाभ होता है कि अगर मर्दों को इन बातों का प्रभाव नहीं हो रहा होता तो कम से कम औरतों पर प्रभाव हो जाए। कोई न कोई तो एक घर में ऐसा हो जो इन बातों को सुनकर उन पर अनुकरण करने की कोशिश कर रहा हो। और देखने में यही आया है कि औरतों पर प्राय जगह प्रभाव भी होता है। इसलिए हम कभी यह नहीं कह सकते कि औरतों से ख़िताब करना समय का नष्ट करना है और बेफ़ाइदा है। जैसा कि मैंने कहा प्राय समय देखने में आया है कि सीधा औरतों को जो ख़िताब किया जाए तो उनमें न सिर्फ प्रभाव होता है बल्कि ग़ैरमामूली सकारात्मक तबदीली पैदा होती है। फिर सीधा ख़िताब का एक यह भी लाभ है और इसलिए भी ज़रूरी है कि औरतों की गोदों में नई नस्ल परवान चढ़ रही है और उनकी बेहतर तर्बीयत के लिए माताओं का बहुत बड़ा किरदार है और जब सीधा औरतों से सम्बोधित हुआ जाए तो उन्हें अपनी ज़िम्मेदारी का पहले से बढ़कर एहसास होता है। हाँ कुछ ऐसी ढीट माताएं भी होती हैं और औरतें होती हैं जिन को इस बात से कुछ परवाह नहीं होती और वे यही कहती हैं, वही पुरानी बातें दोहराने लग जाते हैं। ये प्रस्तावना मैं इसलिए बांध रहा हूँ , ये सारी बातें इसलिए वर्णन कीं कि मैं इस वक़्त जो कुछ संक्षिप्त बातें करूँगा उस को ध्यान से सुनें और फिर इस पर अनुकरण करने की कोशिश करें। सिर्फ यह नहीं कि मैं यहां आया, आप से ख़िताब किया , आपने सुना और घर चली गईं और फिर वही सुबह हुई और शाम हुई। न धर्म रहा न उस की परवाह रही। बहरहाल जो लोग यह कहते हैं कि वही पुरानी बातें दुहराई जाती हैं उनको हमेशा याद रखना चाहिए कि क़ुरआन करीम और हदीस और सुन्नत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आदेशों और इर्शादात और रसूल के आचरण और नसीहतें कभी भी पुरानी बातें नहीं बनतीं बल्कि हर लम्हा वह एक नए दृष्टिकोण के साथ धर्म की समझ पैदा करने वाली और अल्लाह तआला का क़ुरब दिलाने वाली होती हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यहां मैं यह भी स्पष्ट कर दूं कि यह न समझा जाए कि यह बुराई या कमज़ोरी सिर्फ़ औरतों में है इसलिए मैं औरतों से सम्बोधित हूँ। मर्दों में यह कमज़ोरी शायद औरतों से बढ़कर हो और प्राय जगह यह कमज़ोरी और बुराई उनमें देखने में आती भी है। अत: मर्दों को भी ये बातें सुनकर अपनी समीक्षा लेते रहना चाहिए ताकि घर जा कर सिर्फ औरतों को यह न कहें कि तुम्हारे अन्दर बुराईयां थीं , तुम्हें सम्बोधित किया गया है बल्कि यह एक मुझे अवसर मिला है जहां से दोनों को सम्बोधन करूँ तो इसलिए मैं यह वर्णन कर रहा हूँ। अत: मर्दों को अपनी समीक्षा लेते रहना चाहिए। मैं प्राय जितना मर्दों को सम्बोधित कर के बातें कहता हूँ अगर हमारे मर्दों की अधिकतरता उनको सुनकर उन पर अनुकरण करने लग जाए तो औरतें तो उनके नमूने देखकर ही अपने आप अपनी इस्लाह कर लेंगी उनमें तब्दीलियां पैदा हो जाएँगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस वक़्त यहां रहने वाले अहमदियों की अधिकतर उन लोगों पर आधारित है जो हालात की वजह से और खासतौर पर मज़हबी हालात की वजह से पाकिस्तान से हिजरत कर के आए हैं। अगर आर्थिक हालात की वजह से भी हिजरत की है तो कुछ एक अच्छे पढ़े लिखे लोग हैं उनकी अधिकता ने यहां की हुकूमत को अपनी हिजरत का मक़सद पाकिस्तान में अहमदियों के लिए मज़हबी आज़ादी ना होना बताया है और यहां की हुकूमत ने बावजूद जहां कुछ इस्लाम विरोधी लोगों के शोर मचाने के आप लोगों को असाइल्म दिया है और आज़ादी से अपने मज़हब के इज़हार का अवसर दिया है। अत: इस बारे में से हमें दो बातें हमेशा याद रखनी चाहिऐं। एक तो यह कि इन देशों की हुकूमतों का शुक्रगुज़ार बनें जिन्होंने आपके मज़हबी अधिकार क़ायम कर के मज़हबी आज़ादी दी , जहां हम आज़ादी से नमाज़ें भी पढ़ सकते हैं और तब्लीग़ भी कर सकते हैं। इसलिए इस देश की बेहतरी के लिए शुक्रगुज़ारी के तौर पर हमें हर संभव कोशिश करनी चाहिए कि किस तरह हम इन देशों को लाभ पहुंचा सकें और सबसे बड़ा लाभ जो हम उनको पहुंचा सकते हैं वह यह है कि उनको इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा से परिचित करें , तब्लीग़ करें। यह ग़लत धारणा है कि औरतों को तब्लीग़ के अवसर नहीं मिलते। मिलते हैं और बहुत मिलते हैं और इस के लिए प्रोग्राम बनाने चाहिऐं। अत: शुक्रगुज़ारी का एक तरीक़ यह भी है कि उनको इस्लाम का वास्तविक पैग़ाम पहुंचाया जाए ताकि जो बिना कारण के विरोध मुसलमानों के ग़लत व्यवहार की वजह से किया जाता है और इस वजह से फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम को भी उपहास का शिकार बनाया जाता है इस को हम ने दूर करना है।

दूसरी बात यह कि क्योंकि मज़हबी कारणों के आधार पर हमें यहां रहने की इजाज़त मिली है इसलिए अपनी धार्मिक आचरण और रुहानी हालत को इस्लाम की शिक्षा के अनुसार हमें ढालने की कोशिश करनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हम से जो आशाएं रखी हैं उन पर पूरा उतरने की कोशिश करें। आप अलैहिस्सलाम हम से क्या चाहते हैं हर औरत और मर्द को इन बातों को अपने सामने रखना चाहिए

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हमेशा याद रखें कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मसीह व महदी माना है तो इसलिए कि अल्लाह तआला ने इस बारे में हमें हुक्म दिया है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की पेशगोई फ़र्मा कर यह इरशाद फ़रमाया था कि आख़िरी ज़मान में जब मसीह व महदी दावा करेगा तो उसे स्वीकार लेना, इसे क़बूल कर लेना, उस की जमाअत में शामिल हो जाना बल्कि यहां तक फ़रमाया कि उसे मेरा सलाम पहुंचाना। इसलिए कि आने वाला मसीह और महदी इस्लाम की शिक्षा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लाए हुए धर्म का पुनर्जागरण के लिए आएगा। इस को नए सिरे से दुनिया को दिखाने के लिए आएगा। इस्लाम की ख़ूबसूरती जिसको कुछ स्वार्थी उल्मा ने दाग़दार कर दिया है इस ख़ूबसूरती को निखार कर पेश करने के लिए आएगा। इसलिए इस को मानना ताकि तुम्हें इस्लाम की सही शिक्षा का पता लगे। मसीह मौऊद के आने से इस्लाम का पुन: जागरण होगा एक नए दौर का आरम्भ होगा। इस्लाम की ख़ूबसूरत और पवित्र शिक्षा जिसको पैरों,फ़क़ीरों और तथा कथित उल्मा ने तोड़-मरोड़ कर अपनी इच्छा के अनुसार ढाल लिया है इस की वास्तविक तस्वीर अल्लाह तआला की ख़ास रहनुमाई से दुनिया के सामने मसीह मौऊद रखेगा। अत: मसीह मौऊद को क़बूल करना और आपकी नसीहतों और उपदेशों पर अनुकरण करना कोई मामूली चीज़ नहीं है बल्कि यही वास्तविक इस्लाम है। इस दृष्टि से हम में से हर एक को इन बातों को ध्यान से सुनना चाहिए और उन पर अनुकरण करना चाहिए वर्ना आपकी बैअत में आने का दावा एक ख़ाली और खोखला दावा है। आप अलैहिस्सलाम ने बड़े स्पष्ट तौर पर फ़रमाया है कि मैं हक्म और अदल हूँ और अगर तुम मेरे हाथ पर बैअत कर के और मुझे अल्लाह तआला की तरफ़ से भेजा हुआ समझ कर फिर मेरी बातों पर अनुकरण नहीं करते , मैं जो फ़ैसले करता हूँ जो नसीहतें करता हूँ उन पर अनुकरण नहीं करते, जो मेंने कहा है इस पर अनुकरण नहीं करते तो फिर अपने ईमान की फ़िक्र करो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: हमें बहुत फ़िक्र करनी चाहिए कि एक तरफ़ तो हम अपने देश से इस देश में इसलिए आए हैं कि हमें अपने ईमान के अनुसार अनुकरण से रोका जा रहा है , दूसरी तरफ़ हम यहां आकर इस बात को भूल जाएं कि जिस पर ईमान लाने की वजह से हमने हिजरत की इस की बातों पर ध्यान न दें, दुनिया की रंगीनियाँ देखकर भूल जाएं कि हमारा ईमान हम से क्या मांग करता है? हम ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जिस आशिक़ सादिक़ को स्वीकार किया है और जिसके हाथ पर बैअत कर के हम ने यह वादा किया है कि हम आने वाले मसीह व महदी के हाथ पर बैअत कर के धर्म के पुनर्जागरण करेंगे, धर्म को पुन: ज़िन्दा करने के लिए अपनी भरपूर कोशिश करेंगे , अपने अंदर पवित्र तबदीलियां पैदा करेंगे, ख़ुदा तआला के क़रीब होंगे लेकिन यहां आकर दुनिया देखकर हम सिर्फ इस बात को देखने वाले बन जाएं कि अधिक से अधिक रुपया पैसा किस तरह कमाया जा सकता है , दौलत किस तरह कमाई जा सकती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया बार-बार जिस बात की हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नसीहत फ़रमाई है वह यह है कि हम आपकी बैअत में आने के बाद अल्लाह तआला की तरफ़ ध्यान करें। सिर्फ दिखावे का ध्यान नहीं बल्कि वास्तविक ध्यान हो। कल ख़ुत्बा में भी मैं ने ज़िक्र किया था कि किस तरह ध्यान हो किस तरह अल्लाह तआला से मुहब्बत क़ायम की जाए। अपनी नमाज़ों को सँवारो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इसी बात पर-ज़ोर दिया कि अपनी नमाज़ों को सँवारो।

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अत: हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इस्तिग़फ़ार की तरफ़ ध्यान करो। इस्तिग़फ़ार करने से आदमी बहुत सी ग़लत किस्म की इच्छाओं से बचता है, ग़लत कामों से बचता है। इस्तिग़फ़ार की तरफ़ ध्यान की ज़रूरत है। आप ने फ़रमाया कि इस्तिग़फ़ार करते रहो और मौत को याद रखो। हमेशा अल्लाह तआला से बख़्शिश माँगो और याद रखो कि मौत यक़ीनी है। एक रोज़ आनी है। जब इन्सान मौत को याद रखता है तो फिर ख़ुदा तआला की तरफ़ ध्यान पैदा होता है। यह एहसास होता है कि यह दुनिया जो सिर्फ कुछ दिन की है यही मेरी ज़िन्दगी का मक़सद नहीं है बल्कि मरने के बाद की ज़िन्दगी ही असल ज़िन्दगी है और जब उस की हक़ीक़त पता चल जाएगी, उस का एहसास हमारे दिल में पैदा होगा तो फिर दुनियावी चीज़ों की प्राप्ति के लिए हमारी जो हर वक़त कोशिशें रहती हैं वह नहीं होंगी।

इस बात पर ही ध्यान नहीं होगी कि अमुक औरत का ज़ेवर बड़ा अच्छा है। मेंने भी वैसा ही बनाना है। अमुक औरत का घर बहुत बड़ा है हमें भी वैसा ही लेना चाहिए और इस के लिए फिर पतियों को हर समय दबाओ में रखा जाए या मर्द भी इसी लालच के पीछे पड़े रहें। या अमुक ने,औरतों में ख़ास तौर पर फ़ैशन की बातें होती हैं कि,अमुक ने बड़े अच्छे फ़ैशन के कपड़े पहने हुए हैं, मैंने भी वैसे लेने हैं। यहां आकर जो पैसा आता है तो फिर पाकिस्तान के डीज़ाइनर्ज़ के कपड़े बनाने का बड़ा शौक़ पैदा हो जाता है हालाँकि वही कपड़े सस्ते भी मिल जाते हैं। चाहे तौफ़ीक़ हो न हो इसी बात पर-ज़ोर दिया जाता है कि हमने नए फ़ैशन के कपड़े पहनने हैं। ज़रूर पहनें लेकिन अपनी पहुंच के अंदर रहते हुए। यह एक मोमिन का काम नहीं है कि दुनियावी चीज़ों पर नज़र रखे। हाँ अल्लाह तआला की नेअमतें हैं जिनसे लाभ ज़रूर उठाना चाहिए लेकिन यह नहीं कि इन चीज़ों को प्राप्त करने के लिए घरों में फ़साद पैदा हो जाएं। हाँ अगर मुक़ाबले करने हैं, मुक़ाबला अच्छी चीज़ है, मुक़ाबला करें, लेकिन मुक़ाबले करने हैं तो अल्लाह तआला से यह दुआ करें कि अमुक ने धर्म के लिए इतनी बड़ी क़ुर्बानी दी है अल्लाह तआला मुझे भी तौफ़ीक़ दे तो मैं भी इस से बढ़कर क़ुर्बानी करूँगा। अमुक व्यक्ति की औलाद बड़ी नेक है जिनकी नमाज़ों पर भी ध्यान है और धर्म के कामों की तरफ़ भी ध्यान है अल्लाह तआला मुझे भी नमाज़ों का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ दे और इस के लिए कोशिश की जाए। ख़ुदा तआला मेरी औलाद को भी धर्म की सेवा में आगे बढ़ाए रखे और इबादत करने वाला बनाए

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: एक अहमदी मोमिन और मोमिना में धर्म में एक दूसरे के आगे बढ़ने की रूह होनी चाहिए न कि दुनियावी चीज़ों के लिए और जब इस सोच के साथ हम अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करते हैं तो अल्लाह तआला जो बड़ा व्यापक रहमत और मग़फ़िरत वाला है जो अपनी तरफ़ आने वाले बंदे से बहुत अधिक प्यार का सुलूक करता है वह बंदों की नेक इच्छाओं और दुआओं को सुनता है उनके नेक अनुकरण को स्वीकार करता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया औरत जब वास्तविक आबिदा बनती है तो इस का प्रभाव सिर्फ उसी तक सीमित नहीं रहता बल्कि उस की औलाद पर भी इस का नेक प्रभाव पड़ता है और नेक छाप पड़ती है बल्कि मर्दों पर भी नेक प्रभाव हो जाता है। बहुत सारी नेक औरतें हैं जिन्हों ने मर्दों को भी नेकी की तरफ़ माइल कर लिया और इसी लिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो ने लजना इमाउल्लाह की संस्था भी बनाई थी कि औरतें ख़ुद नेकियों में भी बढ़ें और जमाअत के कामों में भी आगे आएं ताकि अल्लाह तआला के फ़ज़लों की वारिस बनती रहीं। खासतौर पर लड़कियां तो बड़ी उम्र तक माताओं के अम्लों को देखती हैं। वे देखती हैं कि माताएं हमारी क्या कर रही हैं। जब एक लड़की अपनी इबादत करने वाली और ज़िक्र इलाही करने वाली माँ को देखती है तो एक नेक प्रभाव इस पर क़ायम होता है और अगर हमारी अगली नस्ल की तर्बीयत इस तरह पर हो जाएगी कि इस मैं इबादत करने वाले बच्चे और इबादत करने वाली बच्चियां पैदा होनी शुरू हो जाएं तो निसन्देह हम जहां अपनी औलाद को दुनिया की बुराईयों से बचाने वाले होंगे वहां आप अगली आने वाली नस्लों को भी दुनिया की बुराईयों से बचाने वाली और ख़ुदा तआला के क़रीब करने वाली बन जाएँगी। अत: औरतों को भी और मर्दों को भी इस ज़िम्मेदारी को समझने की आवश्यकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: इन देशों में जहां आज़ादी और रोशन ख़्याली के नाम पर ऐसी बातों के इज़हार किए जाते हैं जिससे हर किस्म के भावनाएं भड़कती हैं,इन देशों में तक़्वा पैदा करने के लिए ख़ास चेष्ठा करने की ज़रूरत है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: हर अहमदी मर्द और औरत का काम है कि तक़्वा में तरक़्क़ी करे ताकि नेकियों में तौफ़ीक़ मिले। अल्लाह तआला का क़ुरब प्राप्त हो और दुनियावी बुराईयों से हम बच सकें और अपनी नस्लों को उनसे बचा सकें और अपनी बैअत का हक़ अदा करने वाले बन सकें। अल्लाह तआला हम सबको उस की तौफ़ीक़ दे कि हम वास्तविक तक़्वा अपने अंदर पैदा करने वाले बन सकें और अल्लाह तआला के फ़ज़लों के वारिस हों। अब दुआ कर लें

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 1 बजकर 35 मिनट तक जारी रहा। आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। इसके बाद नास्रात और लजना के विभिन्न ग्रुपों ने डच, अरबी, उर्दू और बंग्ला भाषा में तराने और दुआइया नज़्में पेश कीं। आख़िर पर अफ़्रीकन ग्रुप ने अपने विशेष अंदाज़ में कलिमा तय्यबा का तराना पेश किया।

इस के बाद 2 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ ले जा कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

ग़ैर अज़ जमाअत मेहमानों से ख़िताब

आज मर्दाना जलसा गाह में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ ग़ैर मुस्लिम और ग़ैर जमाअत मेहमानों का एक प्रोग्राम रखा गया था। इस प्रोग्राम में विभिन्न क़ौमों से सम्बन्ध रखने वाले 125 मेहमान शामिल थे। मेहमानों की एक बड़ी संख्या पड़ोसी देश बेल्जियम से आकर भी शामिल हुई थी।

इन मेहमानों में नन स्पैट के मेयर DHR.B Van De Weerd भूतपूर्व मैंबर पार्लीमैंट DHR. Harry Van Bommel Patron Ihrc फ्रीलांस जर्नलिस्ट Dhr. Ewout Klei चाइल्ड सायका लूजस्ट Nikita Shahbazi डच सुप्रीम कोर्ट की जज Mrs. Dana Baldinger अपने पति के साथ आईं Mr. Herman Meester स्कॉलर Linguistics & Economics जज क्रीमिनल केसिज़ Mr. IC Gillesse पब्लिक Prosecutor आदरणीय Corine Potter लाहौरी जमाअत के चेयरमैन Dhr. Jahier Khan

इसके अतिरिक्त वकीलों, डाक्टरों, टीचरों, बिज़नस मैन और विभिन्न संस्थाओं और विभागों में काम करने वाले और ज़िन्दगी के विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले लोग शामिल हुए।

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ ले गए और प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय अब्दुल लतीफ़ फरहा खान साहिब ने की और इस के बाद उस का डच भाषा में अनुवाद किया।

इस के बाद एक मेहमान Mr.L.Klappe Elderman Gemeente Ermelo ने अपना सम्बोधन पेश किया। महोदय ने कहा। आप लोग बहुत सेवा भाव से काम करते हैं और समाज का सक्रिय हिस्सा हैं। हमारे क्षेत्र में आपकी जमाअत ने काफ़ी काम किया है। साल के आरम्भ पर वकारे अमल करते हैं। हमारी इच्छा है कि आपकी कम्यूनिटी के लोग हमारे शहर में आबाद होते रहें। अभी आबाद होना शुरू नहीं हुए। आप जब भी हमारे शहर आते हैं, आप हमारे साथ एक किस्म का सम्बन्ध बनाते हैं जिससे हमारे आपस के प्यार और भाईचारा में वृद्धि होती है। आप एक शान्ति प्रिय जमाअत हैं और मज़हबी आज़ादी का सही रंग में प्रयोग करते हैं।

इस के बाद भूतपूर्व मैंबर पार्लीमैंट Harry Van Bommel साहिब ने अपना सम्बोधन पेश करते हुए कहा। हम थाईलैंड, मलेशीया के अहमदी रिफ्यूजीज़ के बारे में से कोशिश कर रहे हैं। उनका मामला हॉलैंड की पार्लीमैंट में भी उठाया है और हम इंशा अल्लाह उनकी मदद करने में कामयाब हो जाएंगे। यहां भी और यूरोप में भी रास्ता खुलेगा। चार माह पहले मैं ख़ुद भी थाईलैंड और मलेशिया गया था और उन रिफ्यूजीज़ से मिला था। ये वहां बहुत मुश्किलों और तकलीफ़ वाले हालात में हैं

इस के बाद मेयर Gemeente Nunspeet (DHR.B.Van De Weerd) ने अपना सम्बोधन पेश किया। महोदय ने कहा ख़लीफ़तुल मसीह के यहां आने पर बहुत ख़ुशी हुई है। हम ख़लीफ़ा को यहां स्वागत कहते हैं। जमाअत अहमदिया से हमारा पुराना सम्बन्ध है। आप लोगों की हमारे समाज में ख़ास हैसियत है। आपके प्यार,अमन, भाई चारा की हमें ज़रूरत है। आपका जलसा एक मज़हबी जलसा है। इस दृष्टि से आपका जलसा बहुत विशेष है। इन तीन दिनों में हम सब इस बात पर ग़ौर करेंगे कि हमारी ज़िन्दगी का मक़सद क्या है। हम अपने समाज को किस तरह बेहतर बना सकते हैं। आशा है आप इन सवालों के जवाब तलाश करने की कोशिश करेंगे

इसके बाद 4 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर ने अंग्रेज़ी भाषा में ख़िताब फ़रमाया। जिसका हिन्दी अनुवाद पेश है

ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

तशह्हुद,तअव्वुज़ और सूर फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: समस्त सम्मान्नीय मेहमान आप सब पर अल्लाह तआला की रहमत तथा सलामती हो। सबसे पहले तो मैं अपने मेहमानों का शुक्रिया अदा करना चाहता हूं जिन्होंने हमारी दावत क़बूल की और आज हमारे साथ मौजूद हैं बावजूद के इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक के ख़िलाफ़ पिछले सालों से बहुत कुछ बोला जा रहा है। वास्तव में इस्लाम के बारे में ग़लत मालूमात और नफ़रत फैलाने

और रसूल करीम के आचरण को दाग़दार करने की संयुक्त कोशिश की गई है। एक मुसलमान कम्यूनिटी की तरफ़ से आयोजित धार्मिक आयोजन में आपका शामिल होने आपकी खुले दिल और खुले दिमाग़ की तसौक़ करती है और इस फ़ेअल पर आपकी प्रशंसा ही कर सकता हूँ और शुक्रिया अदा करता हूँ। मेरी दुआ है कि आपका खुला दिल और धैर्य हमेशा आपके अंदर मौजूद रहे और और अधिक फैले ताकि समस्त कम्यूनिटीज़ के लोग अमन और एक दूसरे के साथ आपसी मुहब्बत तथा सम्मान के साथ रह पाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हम अहमदी मुसलमानों का दृढ़ यक़ीन है कि मज़हब हर एक का व्यक्तिगत मामला है। यह तो दिल का मामला है और किसी को दूसरे के अक़ीदों के बारे में ग़लत बातें करने का कोई हक़ नहीं है। किसी को दूसरों की पवित्र हस्तियों का मज़ाक़ नहीं उड़ाना चाहिए। क्योंकि लोगों से मतभेद और नफ़रत का सुलूक करने से सिर्फ दर्द और तकलीफ़ ही जन्म लेती है और अधिक दूरी ही पैदा होती है। इस के विपरीत धैर्य और आपसी इज़्ज़त तथा सम्मान को बुनियाद बनाकर हम शान्तिप्रिय और आपसी भाईचारा पर आधारित समाज बना सकते हैं। जैसा कि मैंने कहा कि ग़ैर मुस्लिम दुनिया में लंबे अरसा से रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चरित्र पर आरोप लगाए जा रहे हैं। और यहां हॉलैंड में भी कुछ लोग इस्लाम के ख़िलाफ़ नफ़रत फैलाने में आगे हैं और ये लोग क़ुरआन करीम और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बेहूदा और निराधार झूटे आरोप लगा रहे हैं। अत: इस बारे में से में जो भी संक्षिप्त समय उपलब्ध है इस में इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं और इस्लाम धर्म के संस्थापक रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के किरदार के बारे में से बात करूँगा

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: परन्तु आगे बढ़ने से पहले में उमूमी तौर पर बताना चाहूँ गा के वास्तव में "अमन" क्या चीज़ है और क्यों इतना प्रमुख है। इस में कोई शक नहीं कि व्यक्तिगत सतह अनुकरण वाली "एक ऐसी चीज़ है जिसे पाने की हम में से हर एक की इच्छा होती है। लेकिन व्यापक स्तर पर अनुकरण वाली' एक ऐसी चीज़ है जिसको प्राप्त करने का विभिन्न जातियों और कम्यूनिटीज़ दावा करती हैं। बहरहाल "अमन" क्या चीज़ है और हमें उस की क्यों ज़रूरत है? मेरे ख़्याल में "अमन' की दो किस्में होती हैं। एक तो बाहरी अमन होता है और दूसरा अंदरूनी अमन होता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: प्राय लोग ज़ाहिरी तौर पर तो ख़ुश और सन्तुष्ट होने का दिखावा कर सकते हैं लेकिन बे-शक बाहरी तौर पर उनमें सुकून नज़र आता है लेकिन वे अंदरूनी तौर पर सुकून से वंचित होते हैं। उदाहरण के तौर पर ताक़तवर और प्रभाव रखने वाले लोग प्राय अमन की स्थापना की बात करते हैं जबकि उनके पास दुनिया की समस्त सुविधाएं और सहूलतें उपलब्ध होती हैं। लेकिन इस के बावजूद उनमें से बहुत से लोग ये स्वीकार करते हैं कि वे ज़हनी सुकून की तलाश में रहते हैं और वे ज़हनी तनाव का शिकार रहते हैं। बाहरी और दुनियावी दृष्टिकोण से तो उनके पास हर वे चीज़ होती है जो वे चाहते हैं लेकिन फिर भी उनके दिमाग़ परेशानी और ख़ौफ़ से जकड़े हुए होते हैं और उनके दिल सुकून से ख़ाली होते हैं। अत: हक़ीक़त यही है कि जब तक कोई व्यक्ति दिल के सन्तोष प्राप्त ना कर ले उनकी दुनियावी सुविधाएं व्यर्थ होती हैं। आसान शब्द में यह कहा जा सकता है कि वाहिद चीज़ जो पैसा से ख़रीदी नहीं जा सकती वे भीतरी अमन है। उदाहरण के तौर पर एक अमीर माँ जिसके पास अपनी ज़रूरत से बढ़ कर माल दौलत की अधिकता हो मगर उस का बच्चा कहीं गुम हो जाएगा तो दुनिया की हर संभावित सुविधा होने के बावजूद वह दीवानी और मायूस होती है जब तक कि वह अपना बच्चा नहीं पा लेती।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अफ़सोस है कि तरक़्क़ी करने वाले और तरक़्क़ी कर रहे हर दो किस्म के देशों में दिमाग़ी सेहत के समस्याएँ में निरन्तर वृद्धि हो रहा है। अमीर देशों में काफ़ी लोग माली तौर पर सुदृढ़ होने के बावजूद ख़ुदकुशियाँ कर रहे हैं, मानसिक हमलों और डिप्रेशन का शिकार हो रहे हैं। इस में भी हैरानी वाली बात नहीं कि समाज के कमज़ोर और असहाय लोग जो अपनी बुनियादी ज़रूरतें भी पूरी नहीं कर पा रहे और जो इन सुविधाओं के प्राप्त करने की बहुत इच्छा रखते हैं जोकि दूसरों को उपलब्ध हैं, उनमें भी दिली सुकून में कमी आम पाई जाती है। अत: मायूसी और अंदरूनी बेचैनी अमीरों और ग़रीबों दोनों में महसूस की जा सकती है। एक तरफ़ अमीर लोग जिनके पास ज़रूरत की हर चीज़ उपलब्ध है वे दिली सुकून से वंचित हैं तो दूसरी तरफ़ ज़रूरतमंद और ग़रीब अपने हालात से परेशान हैं और दूसरों की तरह आरामदेह ज़िन्दगी को प्राप्त करने की बहुत इच्छा रखते हैं। लोगों के बेशक उद्देश्य और इच्छाएं विभिन्न हों और बेशक वे सांसारिक लिहाज़ से एक दूसरे से विभिन्न हों लेकिन दिली सुकून प्राप्त करने में असफलता की दृष्टि से सब एक जैसे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आजकल समालोचक, दुनियावी समस्याओं के कारण मज़हब और विशेष रूप से इस्लाम को क़रार देने में जल्दी करते हैं। हालाँकि बहुत से लोग जो कि भीतरी व्याकुलता और बेचैनी का शिकार हैं वे ऐसे हैं जो सम्पूर्ण रूप से मज़हब से दूर रह कर ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। अत: उनकी समस्यायों की वजह से इस्लाम या किसी दूसरे मज़हब को आरोप का पात्र नहीं ठहराया जा सकता

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: एक धार्मिक रहनुमा होने की हैसियत से मेरा दृढ़ ईमान है कि मज़हब वर्तमान समय के समस्यायों का कारण बनने की बजाय उन समस्यायों का हल है। और इस्लामी दृष्टिकोण से इस का हल बहुत ही सादा है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें शिक्षा दी है कि वास्तविक ज़हनी सुकून इस बात की मांग करती है कि इन्सान अल्लाह तआला को पहचाने और इस के साथ एक सम्बन्ध पैदा करे क्योंकि इस्लाम के अनुसार अल्लाह तआला के गुणों में से एक गुण यह भी है कि वह अमन तथा शान्ति का स्रोत है। वह अपनी समस्त सृष्टि के लिए चाहता है कि वह मज़हब और अक़ीदा से ऊपर होकर शान्ति प्रिय ज़िन्दगी बसर करें। इसी तरह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शिक्षा दी कि अल्लाह तआला समस्त मख़लूक़ात को पालने वाला और रिज़्क़ प्रदान करने वाला है। वह सिर्फ़ मुसलमानों को नहीं पालता बल्कि उस का रहम समस्त इन्सानियत पर छाया है चाहे वह ईसाई हों, हिंदू हों, सिख हों, यहूदी हों या दूसरे धर्मों के मानने वाले हों और उन पर भी जो किसी भी मज़हब को नहीं मानते और अल्लाह तआला के वजूद के इंकारी हैं। इस्लाम मुसलमानों को शिक्षा देता है कि उन्हें चाहिए कि वे अपनी समस्त शक्तियों को काम लाते हुए अल्लाह तआला के गुणों को अपनाएं। इसी लिए रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अनुयायियों से कई बार फ़रमाया कि वे रहम दिल बनें और एक दूसरे का ख़्याल रखने वाले हों और एक दूसरे पर सलामती भेजने वाले हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस्लाम के संस्थापक ने एक सुनहरी उसूल प्रदान फ़रमाया कि एक वास्तविक मुसलमान को चाहिए कि वह दूसरों के लिए भी वही पसंद करे जो अपने लिए पसंद करता है। मेरे निकट इस सादा मगर इंतिहाई गहरे बिन्दु पर सिर्फ मुसलमान ही नहीं बल्कि दूसरे भी अनुकरण करने वाले हों तो यह समाज के लिए स्थायी अमन का माध्यम साबित होगा। कोई शक नहीं कि हर कोई अपने लिए और अपने चाहने वालों के लिए अमन की इच्छा करता है लेकिन अगर लोग यह दावा करें कि वे अपने विरोधियों और शत्रुओं के लिए चाहते हैं कि वे अमन और सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारें तो उनमें से प्राय झूठ बोल रहे होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: यह वह शराफ़त का स्तर है और खुले दिल की रूह है जिसकी इस्लाम मांग करता है। इस्लाम एक ऐसा मज़हब और शिक्षा है जो बे नफ़्सी को बढ़ावा देता है और मानव जाति को हर प्रकार के स्वार्थ मांग छोड़ने पर ज़ोर देता है। इस्लाम के संस्थापक ने यह उसूल वर्णन फ़रमाया कि इन्सान को चाहिए कि वह खुले दिल का हो और इस की नीयत में कोई खोट न हो। अपने लिए बेहतरीन की इच्छा करने की बजाय उसे चाहिए कि दूसरों के लिए भी इस की वही इच्छा हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अफ़सोस है कि आजकल की दुनिया में हमें इस के विपरीत नज़र आता है। व्यक्तिगत लाभों और

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

लालच नवीन समाज को खा चुके हैं। फ़साद, फ़ित्ना और जंग में वृद्धि होती चली जा रही है और न्याय और बराबरी के उसूल निरन्तर नज़र अंदाज़ किए जा रहे हैं। ये चीज़ कई अमीर और ताक़तवर देशों की पाल्सियों से प्रकट हो रही है। वर्तमान इतिहास यही बताता है कि बड़ी ताक़तें शान्ति की स्थापना के नाम पर दूरदराज़ के क्षेत्रों में अपनी फौजें भेजती हैं लेकिन समय ने यह प्रमाणित कर दिया है कि इस के पीछे उनके असल उद्देश्य व्यक्तिगत लाभों और उन की हिफ़ाज़त करना होता है। इस तरह के मतभेदों में अगर उनका एक भी फ़ौजी मारा जाए तो मातम शुरू हो जाता है और फिर वे बदला लेने की कसमें खाते हैं। हालाँकि जब उनके अपने बम और अन्य हथियार सैंकड़ों बल्कि हज़ारों मासूम शहरियों की जानें लेने का कारण बनते हैं तो किसी किस्म के अफ़सोस या ग़म का इशारा से भी प्रकटन तक नहीं किया जाता। इस किस्म के अन्यायों के परिणाम दूर तक और निहायत तबाह करने वाले हैं। स्थानीय लोगों को नज़र आ रहा है कि उनकी ज़िन्दगियों की क़दर तथा मूल्य बहुत कम है इस की तुलना में उन लोगों की ज़िन्दगियों के जिनका सम्बन्ध ताक़तवर क़ौमों से है। इस किस्म के दुहरे स्तर और इन्सानियत की कमी की वजह से वे मायूसी , ग़ुस्सा और नफ़रत से पराजित हो जाते हैं और फिर उनके ये भावनाएं किसी वक़्त उबल कर बाहर आकर ख़तरा बन जाती हैं। इन क़ौमों का अमन तथा शान्ति तबाह हो चुका है लेकिन बाक़ी दुनिया की यह अज्ञानता पूर्ण सोच होगी कि इस से वे प्रभावित नहीं होंगे। बल्कि दुनिया इस समय आपस में इस क़दर जुड़ी हुई है कि एक जगह पर होने वाले अत्याचार के नतीजे दूसरे देशों तक भी जा पहुंचते हैं और पिछले सालों में इस की कई उदाहरण हम देख चुके हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: पस अगर हम अपनी व्यक्तिगत ज़िन्दगियों और सामूहिक सतह पर वास्तव में अमन चाहते हैं, तो सबसे अहम यह बात है कि हम दूसरों के लिए वही पसंद करें जो अपने लिए करते हैं। जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि दुनिया में वास्तविक अमन की बुनियाद का यही सादा सा उसूल है। जहां तक मज़हब का है, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह शिक्षा दी है कि वास्तविक अमन स्थापित करने के लिए मानव जाति को ख़ुदा पर ईमान लाना होगा, जो कि अमन देने वाला, महानता वाला और पवित्र है। और फिर उस के उत्तम विशेषताओं को अपनी ज़िन्दगियों का हिस्सा बनाने की कोशिश करनी है। इस का अर्थ यह है कि मानव जाति को अमन स्थापित करने के लिए अपने व्यक्तिगत लाभों को सामने रखने के स्थान पर दिल की गहराई से कोशिश करनी होगी। निसन्देह आज दुनिया में जो अधिक-तर मतभेद हैं, उनकी बुनियादी वजह यही है कि सम्बन्धित गिरोह की नीयतें शुद्ध नहीं हैं। उनके कर्मों और बातों में स्पष्ट अन्तर है और जहां इन्सान के कर्म उस की बातों का साथ न दे रहे हूँ, वहां हरगिज़ अमन क़ायम नहीं हो सकता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हर हुकूमत और हर स्यासी रहनुमा, चाहे वह अमरीका से हों, चीन, रूस , यूरोपियन देशों से, मुस्लिम दुनिया से या कहीं और से, ये समस्त जंग तथा झगड़े और ख़ूँन करने को बुरा कहते हैं। परन्तु हक़ीक़त यह है कि यह बुरा कहना केवल उनके व्यक्तिगत लाभों और अपने लोगों तक ही सीमित होता है। वे जो क़ानून का सर्वोच्च होने, इन्साफ़ और इन्सानी अधिकार के राग अलाप रहे होते हैं, जब उनके स्वार्थों पर बात आती है तो ये समस्त नारे खोखले साबित होते हैं। अगर उन पर हमला किया जाए या उनके अधिकार नष्ट किए जाएं तो वे इस अन्याय पर सख़्त ग़म ग़ुस्सा का प्रकटन करते हैं। जबकि यह ख़ुद कमज़ोर देशों को निशाना बनाने और अपने व्यक्तिगत लाभों के लिए इन देशों में आपसी जंगों और फ़सादों को फैलाने के ज़िम्मेदार होते हैं। बजाय उस के कि विभिन्न गिरोहों को बातचीत के लिए मजबूर करें और इन्साफ़ पर आधारित वार्तालाप करवाईं, अहम ताक़तें दूसरे देशों के झगड़े में हमेशा दखल करती हैं और इस गिरोह को शस्त्र और फ़ंड देते हैं जो कि उनके स्वार्थों की सुरक्षा कर रहे हों। यह जलती पर आग का काम कर रहे हैं और नतीजा यह निकल रहा है कि मासूम लोगों जिन में औरतें, बच्चों और बुज़ुर्ग शामिल हैं उन की जानें ज़ाए हो रही हैं और उनके ख़ानदान कष्ट बर्दाश्त कर रहे हैं। शहरों, कस्बों और देहातों पर हमले हो रहे हैं और उन्हें तबाह किया जा रहा है। इस का एक ही नतीजा निकल सकता है और वह यह कि स्थानीय अवाम में बेचैनी बढ़ रही है और वर्तमान के सालों में जंगों से प्रभावित मुसलमान देशों में यही बात सामने आई है। क्या वे बाहरी ताक़तें जो अपने स्वार्थों को प्राथमिकता देती हैं, दावा कर सकती हैं कि वे अमन की सुविधा देने वाली हैं। इसी तरह यह कि क्या इस्लाम के आलोचक दुनिया में फ़साद के लिए इस्लाम को क़सूरवार ठहरा सकते हैं? क्या यह मौजूदा फ़सादों का ज़िम्मेदार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ठहरा सकते हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह स्पष्ट रहे कि दुनिया में फ़साद चाहे वह मुसलमान दुनिया में हो या कहीं और, इस का इस्लाम की शिक्षाओं से कोई सम्बन्ध नहीं है बल्कि उस की वास्तविक कारण एक तरफ़ तो स्वार्थी रहनुमाओं या करपट हुकूमतों के स्वार्थ हैं और दूसरी वजह बाग़ी और अलगाव पसंद गिरोह हैं। यह दहश्तगर्दों और उग्रवाद पसन्द गिरोहों की घिनौनी हरकतों की वजह से है जो कि सिर्फ ताक़त में बढ़ना चाहते हैं। आजकल दुनिया में फ़साद का केन्द्र बेशक मुसलमान देश बने हुए हैं लेकिन कोई भी यह इन्कार नहीं कर सकता कि ग़ैर मुस्लिम देशों ने हल पेश करने की बजाय बिगड़े हुए हालात को और अधिक हवा दी है। यह कहा जाता है कि इन शिद्दत-पसंद और दहश्तगर्दों को इस्लामी शिक्षाएं उभारती देती हैं लेकिन यह स्पष्ट रहे कि इन बातों में दूर दूर तक हक़ीक़त नहीं है। जैसा कि मैंने कहा कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिखाया कि अल्लाह तआला अमन तथा सुकून का स्रोत है और समस्त मानव जाति को पालने वाला है। इस बात का ज़िक्र क़ुरआन करीम की पहली सूरत में मिलता है। अत: यह कैसे संभव है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने असहिष्णुता को बढ़ावा दिया हो या समाज में मतभेद का बीज बोया हो? बल्कि आप ने तो अपनी सारी ज़िन्दगी विभिन्न धर्मों के मध्य समानता को बढ़ावा दिया और समाज की हर सतह पर, घर से लेकर विश्वव्यापी सम्बन्धों पर, अमन का ही ज़ोर दिया। यह आप की सिर्फ शिक्षाएं ही नहीं थीं बल्कि आप इन पर अनुकरण भी करते थे। आरम्भ से ही रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अमन का पैग़ाम फैलाया और बर्दाश्त और सामाजिक एकता को बढ़ावा दिया। आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला समस्त लोगों के लिए चाहे इन का सम्बन्ध किसी भी नस्ल या मज़हब से हो के लिए चाहता है कि वह अमन से रहें और हमेशा इन्सानी इक़दार को स्थापित रखा जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: प्राय यह आरोप लगाया जाता है कि पहले मुसलमानों ने जंगें शुरू कीं और वे दूसरों के अक़ीदों को बर्दाश्त नहीं करते थे। लेकिन द्वेष से दूर इस्लामी तारीख़ से साबित होता है कि यह केवल झूठे और ग़लत आरोप हैं। जब इस्लाम की बुनियाद रखी गई तो मुसलमान ख़ुद मक्का में अत्याचार का शिकार रहे। कुछ बड़ी बेरहमी से क़त्ल किए गए, कइयों पर वहशयाना रंग में ज़ुलम किया गया लेकिन मुसलमानों ने सब्र किया और कभी बदला नहीं लिया। हर संभावित ज़ुलम और बेरहमी को बर्दाश्त करने के बाद कुछ कमज़ोर मुसलमान एक इलाक़ा की तरफ़ हिजरत करके चले गए जिसको आजकल एथोपीया के नाम से जाना जाता है। इस के बावजूद इस्लाम के विरोधियों ने मुसलमानों को शान्ति के साथ रहने नहीं दिया बल्कि उनका पीछा करते हुए इस इलाक़ा के बादशाह तक चले गए और बादशाह से निवेदन किया की कि वे इन मुसलमानों को अपने क्षेत्र से निकाल दे और उन्हें ज़बरदस्ती वापस मक्का भिजवा दे ताकि वे उन पर मक्का में अपना ज़ुलम जारी रख सकें और इस्लाम न फैल सके। इन मुक्का के कुफ्फार ने बादशाह को बताया कि मुसलमानों ने एक नया अक़ीदा घड़ लिया है और वे बुतपरस्ती को बुरा भला कहते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि मुसलमान फ़साद फैला रहे हैं और समाज के अमन को ख़राब कर रहे हैं। बादशाह ने जब प्रतिरक्षा करने का कहा तो मुसलमानों ने समस्त मख़लूक़ात के पैदा करने वाले ख़ुदाए वाहिद पर अपने ईमान का इज़हार किया। यह कि वे इसी ख़ुदा की इबादत करते हैं, लेकिन समस्त क़ौमों और समाजों से अमन के इच्छुक हैं और इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि विभिन्न धर्मों और आस्थाओं रखने वालों को एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। उन्होंने इसी तरह अपने ईमान का इज़हार करते हुए कहा कि अमीर और ताक़तवर लोगों को कमज़ोर लोगों के अधिकार छीनने का अधिकार नहीं होना चाहिए और ग़रीबों को भी उमीरों से नफ़रत नहीं करनी चाहिए।

बादशाह ने विरोधियों से पूछा कि क्या कभी मुसलमानों ने जंग का आरम्भ किया है, क्या कभी झूठ बोला है, क्या कभी वादा तोड़ा है या कभी बग़ावत पर उकसाया है? इस के जवाब में विरोधियों के पास इस हक़ीक़त को स्वीकार करने के सिवा कोई उपाय न था कि मुसलमान इन समस्त आरोपों से मुक्त हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके मानने वाले अत्यधिक की नफ़रत के बावजूद, और बावजूद इस्लाम को फ़ना करने की इच्छा के मक्का वालों ने गवाही दी कि इस्लाम के संस्थापक ने कभी ग़लतब बात नहीं की, कभी वादा नहीं तोड़ा और न कभी ज़ुल्म तथा अन्याय से काम लिया है। उन्हें मजबूर हो कर इस बात को स्वीकार करना पड़ा कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के अनुयायी समाज में सिर्फ और सिर्फ प्यार और मुहब्बत स्थापित करना चाहते हैं और तौहीद की व्यावहारिक तब्लीग़ करते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस्लाम के संस्थापक अत्यधिक विरोध में भी सब्र करते थे और अपनी तकलीफ़ सिर्फ़ ख़ुदा तआला के हुज़ूर पेश करते थे। कुरआन करीम ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह दर्द वर्णन किया है कि मैंने लोगों को अमन और फ़लाह की तरफ़

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 30 April 2020 Issue No.18

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

बुलाया लेकिन उन्होंने अत्याचारपूर्ण व्यवहार अपनाया। मक्का के दौर में विरोधियों की दुश्मनी के बावजूद आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कभी मुसलमानों पर अत्याचार करने वालों के ख़िलाफ़ तलवार नहीं उठाई। न ही आपने कभी मक्का की इंतिज़ामीया के साथ सहयोग में कमी की या किसी भी तरह बग़ावत पर उकसाया। मुसलमानों का यह सब्र अल्लाह तआला के इस आदेश के अनुसार था जो कि कुरआन करीम की सूरह फुर्क़ान आयत 64 में है। इस आयत करीम में अल्लाह तआला मोमिनीन को सम्बोधित हो कर फ़रमाता है कि" और रहमान के बंदे वे हैं जो ज़मीन पर विनम्रता के साथ चलते हैं और जब जाहिल उनसे सम्बोधित होते हैं तो (जवाब में सलाम ही) कहते हैं। अमन ही की बात करते हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: अल्लाह तआला ने मुसलमानों को सब्र की नसीहत की, चाहे जितनी भी तकलीफ़ हो या कष्ट दिया जाए। मुश्किलों और नफ़रत के मुक़ाबला में मुसलमानों को यही हुक्म दिया गया कि अपने दुश्मनों और विरोधियों से अमन की बात करें। नतीजा में मुसलमानों को कष्ट दिया गया , झुठलाया गया और बदनाम किया गया लेकिन फिर भी उन्होंने ख़ुदा के हुक्म से सब्र किया। बावजूद बदला की तरफ़ क़ुदरती झुकाओ के, उन्होंने दुश्मनों के लिए अमन को प्राथमिकता दी जो कि वे अपने लिए पसंद करते थे। और यह अस्थायी अमन नहीं बल्कि स्थायी अमन था। इसी लिए सूरा यूनुस की नम्बर 26 मैं अल्लाह तआला फ़रमाता है :" अल्लाह तुम्हें सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है।' यह आयत स्पष्ट करती है कि मुसलमानों को स्थायी अमन के स्थापना और लोगों में आपसी बराबरी के लिए हर संभव कोशिश करने की नसीहत की गई थी। लेकिन फिर भी कई सालों तक कष्ट पहुंचाने का सामना रहा। फिर जब तकलीफ़ें समस्त सीमाएं पार कर गईं तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके सहाबा मदीना की तरफ़ हिजरत कर गए। फिर भी इस्लाम दुश्मनों ने उन्हें अमन के साथ न रहने दिया और उन पर जंग लागू कर दी। तब सालों तक ज़ुल्म तथा अत्याचार सहन करने और अपने घरों से बेघर किए जाने के बाद अल्लाह तआला ने सुरक्षा के लिए शक्ति के साथ जवाब देने की इजाज़त दी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यहां यह बात ध्यान योग्य है कि जवाबी कार्रवाई की इजाज़त भी इस्लाम या मुसलमानों की सुरक्षा के लिए नहीं दी गई थी बल्कि क़ुरआन शरीफ़ की सूरा उल-हज्ज आयत 41मैं अल्लाह तआला फ़रमाता है कि दिफ़ाई जंग की इजाज़त भी समस्त धर्मों की सुरक्षा के लिए, विश्वव्यापी धार्मिक आज़ादी के लिए दी गई जो कि इस्लाम के दुश्मनों का लक्ष्य था। यह भी स्पष्ट रहे कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अनुयायियों को कठोरता से इन उसूलों पर अनुकरण करने की हिदायत फ़रमाई। उदाहरण के तौर पर आप ने इस बात को यक़ीनी बनाया कि जंगी क़ैदियों से नर्मी का सुलूक किया जाए और जब भी संभव हो उनको रिहा कर दिया जाए। आप ने हिदायत फ़रमाई कि किसी बच्चे, किसी औरत, किसी बूढ़े या बीमार को तकलीफ़ न दी जाए और न ही किसी इबादतगाह को नुक़्सान पहुंचाया जाए और न ही धार्मिक लीडर को लक्ष्य बनाया जाए। इसी तरह हिदायत फ़रमाई कि अगर विरोधी पार्टी थोड़ा सा भी सन्धि का इशारा दे तो शीघ्र सन्धि की तरफ़ रुजू किया जाए ताकि अमन स्थापित करने का कोई भी अवसर नष्ट न हो। यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि जहां पहले मुसलमानों को ख़ूनी और जंग करने वाला कहा जाता है , वहीं आज कई पश्चिमी और ग़ैर मुस्लिम इस बात को स्वीकार करते हैं कि यह बात वास्तव में हक़ीक़त से दूर है। वास्तव में रिसर्च से पता चलता है कि आरम्भिक इस्लामी दौर में लड़ी जाने वाली समस्त जंगों में मरने वालों की संख्या आजकल के एक बम से मरने वालों की संख्या के मुक़ाबला में बहुत ही मामूली है। अत: आपसी जघड़े और नफ़रत के बीज बोने के स्थान पर इस्लाम ने हमेशा मुसलमानों को नफ़रत की दीवारें गिराने और मुहब्बत और दया के पुल बाँधने की नसीहत की है ताकि मानव जाति को बंटने के स्थान पर एक साथ किया जा सके। अत: समाज की हर सतह पर और विभिन्न वर्ग के लोगों तक मुसलमानों को अमल वाली शिक्षा फैलाने की ज़िम्मेदारी है। और इस की बुनियादी वजह, जो कि मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूँ, क़ुरआन शरीफ़ की पहली सूरत में ही वर्णन हुई है और वह यह कि समस्त प्रशंसाए अल्लाह ही की हैं जो कि समस्त जहानों का रब है। इसी तरह, जब ख़ुदा मानव जाति को ज़िन्दा और स्थापित रखने वाला है तो सच्चे मुसलमानों को भी उचित नहीं कि वे अपने जैसे मानवों से द्वेष और दूरी रखें। बल्कि हमारी नफ़रत केवल मुहब्बत, शफ़क़त और आपसी प्रशंसा से दूर हो सकती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: एक अनुकरणीय मुसलमान होने की हैसियत से हमारे कुछ धार्मिक आस्थाएं हैं। हमारा विश्वास है कि ख़ुदा एक है और हमारा फ़र्ज़ है कि हम उसी की तरफ़ रुजू करें और सिर्फ उसी की इबादत करें। और इसी तरह हम क़ुरआन करीम की चिरस्थायी शिक्षा को भी मानते हैं कि धर्म में ज़बरदस्ती नहीं। जैसा कि मैं पहले वर्णन कर चुका हूँ दर्म हमेशा से हर किसी का व्यक्तिगत मामला रहा है और रहेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस्लाम का शब्दिक अर्थ है "अमन" और क़ुरआन शरीफ़ में ऐसी बहुत सी आयते हैं जो क्रम से स्पष्ट करती हैं कि मुसलमानों को हमेशा अमन वाला रहना चाहिए और दूसरों से मुहब्बत और इज़्ज़त से पेश आना चाहिए। अत: कैसे हो सकता है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिन पर ऐसी अमन वाली शिक्षाएं नाज़िल की गईं वह ख़ुद उन शिक्षाओं के विपरीत अनुकरण करते। न्याय प्रिय और पक्षपात रहित इतिहासकार बात की गवाही देते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कभी भी अत्याचार जायज़ नहीं रखा और न किसी के अधिकार मारे। बल्कि हर अवसर पर अनुकरण वाली , रवादारी और दूसरों के अधिकार पूरे करने की शिक्षा दी। और यक़ीनी तौर पर उनकी शिक्षाएं ही हमारा लक्ष्य हैं। और हम गर्व के साथ इस रसूल के उम्मती होने का दावा करते हैं जिसे क़ुरआन शरीफ़ ने रहमतुन लिल् आलमीन कहा है और यही कारण है कि जमाअत अहमदिया का नारा "मुहब्बत सब के लिए, नफ़रत किसी से नहीं" है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस कठिन समय में समस्त मानव जाति को जिस चीज़ के लिए कोशिश करनी चाहिए वह "अमन' है। इस्लाम के आलोचकों को चाहिए कि वे इस्लाम और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ ज़हर उगलने के स्थान पर अपनी भावनाओं को द्वेष और स्वार्थों को ख़त्म करें वर्ना दुनिया में नफरतें बढ़ती चली जाएगी। अशिक्षित और अज्ञान मुसलमान जो अपनी शिक्षाओं को सही तरह नहीं जानते, उनका ग़म तथा ग़ुस्सा ग़ैर मामूली सीमा तक बढ़ जाएगा। जहां भी नौजवान वर्ग मायूसी की हालत को पहुंचता है तो वे आसानी से नफ़रत से भरे हुए मुल्लाओं का शिकार हो जाता है जो फिर उनके ज़हनों में ज़हर भरते हैं। आप को लाज़िमी तौर पर इस के ख़िलाफ़ क़दाम उठाने चाहिऐं अन्यथा नफ़रत की यह कठोर सीमा जिसने दुनिया को अंधेर नगरी बना दिया है, मुसलमानों के बीच अमन को ख़त्म करता चला जाएगा। और बाक़ी सारी दुनिया में अमन का प्राप्त होना एक ख़्वाब बन कर रह जाएगा। जैसा कि मैं कह चुका हूँ कि यह वक़्त की ज़रूरत है कि हम सब मिलकर एक दूसरे के धार्मिक भावनाओं का ख़्याल रखें और अपनी अगली नस्लों के लिए बेहतर भविष्य बनाने के लिए अपनी कोशिश करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आएं हम अपने मतभेदों को एक तरफ़ रखकर समाज में एक सच्चे और स्थायी अमन के लिए कोशिश करें और इत्तिहाद और आपसी नेकी की नींव पर समाज की बुनियाद रखें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आपका बहुत बहुत शुक्रिया।

हुज़ूर अनवर का ख़िताब साढ़े पाँच बजे तक जारी रहा। आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। इस के बाद कुछ देर के लिए हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। इस आयोजन में शामिल होने वाले मेहमानों के लिए शाम के खाने का प्रबन्ध किया गया था। सवा छ: बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मार्की मैं पधारे जहां मेहमानों ने हुज़ूर अनवर के साथ खाना खाया। खाने के बाद मेहमान बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के पास आते , अपना परिचय करवाते और हुज़ूर अनवर से हाथ मिलने का सौभाग्य प्राप्त करते रहे। हुज़ूर अनवर दया करते हुए मेहमानों से वार्तालाप फ़रमाते।

(शेष.....)

☆ ☆
☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad